thearyasamaj.org

वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १५ अंक ३ मार्च २०१५

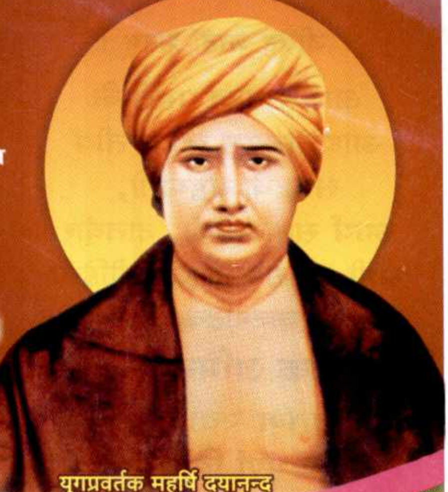

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

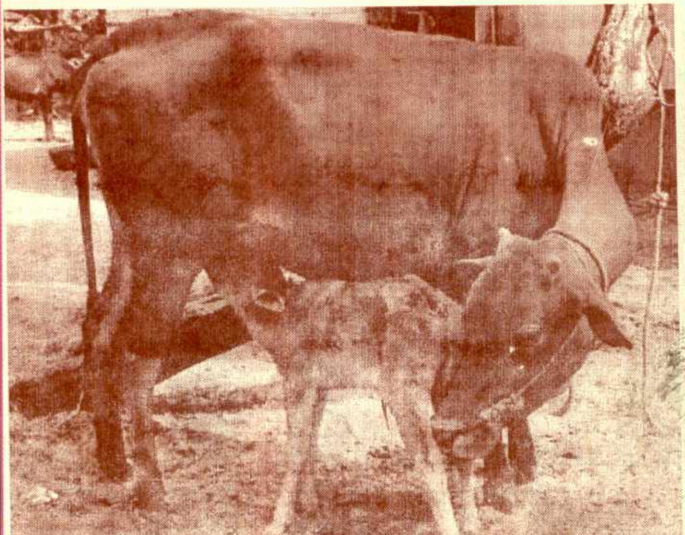

गावो
विश्वस्य
मातरः।

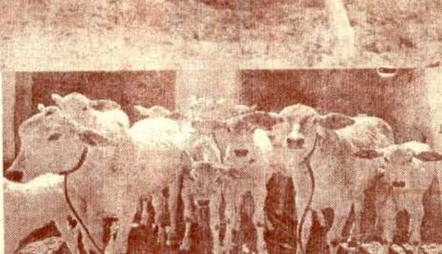

अघ्न्या
यजमानस्य
पशून्
पाहि ।

गौवंश हत्या पाबन्दी का कानून लागू

महाराष्ट्र सरकार का अभिनन्दन !

thearyasamaj.org

जीवेत् शरदः शतम् ।

आर्य समाज परली के आधारस्तम्भ व प्रान्तीय सभा के सहयोगी, आर्य समाजसेवी, दानवीर श्रेष्ठी श्री रामपालजी लोहिया के जन्मदिवस पर

हार्दिक अभिनन्दन !

उत्तम स्वास्थ्य व पूर्ण दिर्घायु की कामना !

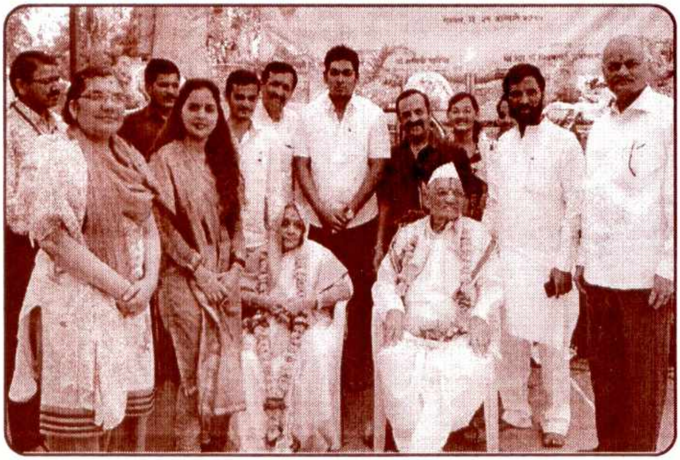

जन्मदिवस पर परली में आयोजित नेत्रचिकित्सा शिविर के अवसर लोहिया दम्पती के साथ सांसद सौ.डॉ.प्रीतमदीदी मुंडे, पद्मश्री डॉ. लहाने व लोहिया परिवार आदि ।

श्री लोहियाजी के आयुष्कामेष्टि यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हुए बीड की सांसद डॉ.प्रीतमदीदी । साथ में हैं अन्य मान्यवर ।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ कलि संवत् ५११५ विक्रम संवत् २०७१

दयानन्दाब्द १९१ फाल्गुन मार्च २०१५

प्रधान सम्पादक

माधवराव देशपांडे

(मो.० ९८२२२९५५४५)

सम्पादक

प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

(मो.० ९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो.०९४२१९५१९०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (मो. ०९३७२५४१७७१)

प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीयम्..४
२) मनुष्य जीवन का लक्ष्य एवं उसके साधन..............६
३) दयानन्द समकालीन विदुषी पंडिता रमाबाई.............१०
४) 'लव जिहाद' की वास्तविकता.............................१३
५) प्रेरक समाचार १८
६) शोक समाचार..१९
७) मानवता संस्कार शिविरों की सूचना.....................२०

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंदांची अमृतवाणी.................२१
२) सुभाषित रसास्वाद/गाथा वाचू दयानंदांची.............२२
३) राष्ट्र ऐक्यासाठी आर्यसमाज (रा.शाहूंचे पत्र)............२४
४) सृष्टीचे नववर्ष - एक चिंतन..............................२६
५) गुट्टे परिवारांकडून दोन लाखांची स्थिरनिधी..............२८
६) शोक वार्ता..३१

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. १००
आजीवन रु. १,०००

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा

thearyasamaj.org

गौमाता की विजय

आखिर प्रतिदिन निर्दयता के साथ कटनेवाली करोडों गऊमाताओं का करूण क्रन्दन उस समय रूक गया, जब महाराष्ट्र में राज्य सरकारद्वारा गोवंशहत्या प्रतिबन्ध कानून लागू हुआ । इससे आर्य समाज सहित अनेकों अहिंसावादी धार्मिक, व सामाजिक संगठनों में तथा लाखों गऊभक्तों में अत्यधिक आनन्द व सन्तोष की लहर छा गयी है। एक दृष्टिसे परमात्मा की विश्वकल्याणकारिणी अमरकृति को जीवनदान ही मिला है । इतना ही नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु उत्तम स्थायी संकेत भी प्राप्त हुए हैं ।

इसके आगे अब गाय, बैल, बछडे-बछडियां, सांड तथा बुढी अथवा दूध न देनेवाली गऊओंको कोई भी मार नहीं सकेंगा । जब कोई गौवंश को मारने का दुःसाहस करेगा, तो उसे इस कानून के तहत पांच वर्ष तक कारावास की सजा व १० हजार रूपयों का जुर्माना होगा । इस ऐतिहासिक क्रान्तिकारी कानून से हजारों गुछडखानों में चलनेवाला निर्मम गोहत्याकाण्ड रूक गया है । आजकल बडे पैमानेपर गोपालन न करने की मानसिकता लोगों मे बढती जा रही है और मांसभक्षण की प्रवृत्ति भी बडे पैमाने पर बढ रही हैं । गाय हमारी माता है । वेदादि शास्त्रों में इस मां का उंचे स्वरों में गौरवगान किया है । गऊ केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं बल्कि विश्व में फैले सभी संप्रदायों के लिए आदर एवं पूजा का स्थान हैं । क्योंकि इस मां के पास किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है । सभी को वह दूध, दही, मख्खन, घी आदि स्निग्ध पदार्थों का वितरण करती है । उसके द्वारा मिलनेवाला पंचगव्य सभी के आरोग्य के लिए उपयुक्त है । दूध अमृत के समान है, जिसका आयुर्वेद में वर्णन आता है । इस माता का समग्र जीवन ही विश्व के कल्याण के लिये काम आता है । ऐसी अघ्न्या माता का गौरवगान महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गोकरूणानिधि इस छोटीसी पुस्तिका में कर उसके अनन्त उपकारों की चर्चा की है । साथ ही ऋषि ने गोवधपर प्रतिबन्ध लगाने हेतु बडी संख्या में भारतीयों के हस्ताक्षरों से युक्त प्रार्थना पत्र महारानी विक्टोरिया के पास भेजना का विचार किया था । देश में जन-जागृति के लिए गो-कृष्यादि रक्षिणी सभा की स्थापना भी की थी । एक दृष्टि से स्वामीजी का यह स्वप्न साकार होने के आसार हैं । आशा है कि मोदी सरकार अब पूरे भारतवर्ष में गोवंशहत्या प्रतिबंध कानून लागू कर गौ को **राष्ट्रीय पशु** घोषित करेंगी ।

thearyasamaj.org

पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चंद्र गुरूजी) द्वारा खुलासा

- आर्यजन दिङ्भ्रमित न हो -

प्रबुध्द आर्यजनों को जानकारी के लिए खुलासा दिया जाता है कि दि. ५ अप्रैल २०१५ को घटांग्रा ता.गंगाखेड जि. परभणी में होनेवाले सम्भाजी पवार (घटांग्रेकर) के संन्यास दीक्षा समारोह में **तपस्वी संन्यासी तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के आधारस्तम्भ, पूर्व प्रधान व वर्तमान संरक्षक पू.श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरूजी)** सम्मिलित नहीं होंगें । समारोह के विज्ञापनपत्र में श्री सम्भाजी पवार ने स्वामीजी की पूर्ण अनुमति के बिना ही अन्य लोगों के साथ स्वामीजी का नाम छापा है । श्री पवार ने जब स्वामीजी को कार्यक्रम में आने को कहा, तब स्वामीजी ने सहज ही में उन्होंने हां कहीं थी । इसका मतलब विज्ञापनपत्र में नाम छापना नहीं माना जाता । इस तरह बिना पूछे नाम छापने से आर्यों में भ्रामकता फैलने की सम्भावना है । इसका स्वामीजीने स्पष्ट शब्दों में खंडन किया है और उक्त समारोह में जाने से स्पष्ट इन्कार किया है । यह खुलासा स्वयं स्वामीजी ने आर्य समाज, गांधी चौक लातूर के वार्षिकोत्सव के समापन पर दि.९/३/२०१५ को आर्यजनों के सम्मुख जाहीर रूप से किया है ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्य समाज परली द्वारा

राष्ट्र के नौनिहाल बालकों को उत्तम गुण,कर्म, आदर्शों के सुसंस्कार प्रदान करने के पवित्र उद्देश्य से

राज्यस्तरीय निवासी 'बाल संस्कार शिविर' २०१५

दि. १६ से ३० अप्रैल २०१५/ स्थान - स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वै.

बच्चें हमारे राष्ट्र की श्रेष्ठ सम्पत्ति हैं । इनमें नैतिकता, सदाचार, मानवता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, राष्ट्रप्रेम आदि सद्गुणों को धारण कराने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी ***राज्यस्तरीय निवासी बालसंस्कार शिविर*** का आयोजन किया जा रहा है । अतः माता-पिता व आचार्यगण अपने कक्षा पांचवी से दसवी तक के बच्चों (लडकों) को इस शिविर में अवश्य भेजें । इस पंद्रह दिवसीय शिविर में प्रातः ४.३० बजे से रात्रौ ९.३० बजे तक की व्यस्त दिनचर्या में बच्चों के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, सामाजिक विकास हेतु विविध उपक्रमोंद्वारा प्रयत्न किये जायेगें ।

शिविर शुल्क रू. ११००/- (प्रवेश रू. १०० + भोजन रू. १०००)

सम्पर्क व मार्गदर्शक - तानाजी शास्त्री (संयोजक) ९८२२२६७७६६

लक्ष्मणराव आर्य (सहसंयोजक) ९७६७६०२६०९ नरेश शास्त्री ९८९०९९८५७०

डॉ.ब्रह्ममुनिजी, प्रा. जगदीश कावरे, वैद्य विज्ञानमुनिजी

thearyasamaj.org

मनुष्य जीवन का लक्ष्य एवं उसके साधन

– आचार्य प्रवीणकुमार

संसार अनादि प्रवाह है । यह एक सतत चलनेवाला चक्र है । इस चक्र में सभी प्राणी फंसे हुए हैं । अपने अपने कर्म के अनुसार वे विभिन्न योनियों में भोग भोगने के लिए प्रवेश करते हैं व मृत्यु को प्राप्त होते हैं । कहा जाता है कि चौरासी लाख योंनियों का चक्र चलता रहता है । जीवात्मा को कभी पशु कभी पक्षी, कभी कीट, कभी पतंग, कभी सर्प तो कभी वृक्ष के रूप में कर्म के अनुसार जन्म लेना पडता है । सभी प्राणी विवश हैं । भोगयोनियां हैं , सिवाय मनुष्य के ! क्योंकि मनुष्य उभययोनि है कर्म व भोग की ! मनुष्य को अपने पिछले कर्मों का हिसाब भी चुकता करना पडता है व अन्य नये कर्म करके उन्नति का विचार भी करना पडता है ।

यह मनुष्य का यह सौभाग्य है कि वह नये सत्कर्म करके देवत्व को प्राप्त कर सकता है । साथ ही योगाभ्यासादि के द्वारा मुक्ति को भी प्राप्त कर सकता है । ऐसा वह इसमें स्वतन्त्र है । अतः दुर्भाग्य भी है कि वह दुष्कर्म करके स्वयं को अधःपतित नीचली योंनियों मे ले जा सकता है । एक और सौभाग्य मनुष्य का यह है कि परमात्मा ने उसे बुद्धि प्रदान की है, जो किसी और प्राणी को नहीं दी है । इसमें चाहे तो वह ऊर्ध्वगमन करें, चाहे तो अधःपतित हो । स्वतन्त्रता और बुद्धि ये दो अत्यावश्यक चीजें परमात्मा ने केवल मनुष्य को दी हैं और अगर हम मानव इस शब्दों पर विचार करें, तो पता चलेगा कि इस शब्दा का अर्थ ही है **–मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मानवः।** जो विचार करके सारे कर्म करें, वह मनुष्य कहलाता है । ऋषियों ने मनुष्य जीवन का लक्ष्य पुरूषार्थचतुष्टय की प्राप्ति बताया है । धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष ये चार मनुष्य के पुरूषार्थ हैं ।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने मुक्ति एवं उसके साधन के विषय में लिखते हुए बहुत ही व्यापक चर्चा की है । **जिससे सब बुरे कर्मों छुटके जन्म मरणादि दुःखसागर से मुक्त होकर सुखस्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति करके सुख में रहना मुक्ति है ।** यहां सर्वप्रथम सब बुरे कर्मों से छुटना यह द्योतित करता है कि यदि आप मुक्ति चाहते हो, उसे बुरे कर्म छोड देने पडेंगें । ऐसा नहीं है कि आप मुक्ति भी चाहते हो और बुरे कर्म भी करते हो, ऐसा हो नही सकता । आपको जीवन में बुरे कर्मों से हटना ही पडेगा । दूसरी बात जन्म मरणादि दुःखों से मुक्त होना पडेगा । अर्थात आप में केवल जीते रहने की इच्छा

thearyasamaj.org

नहीं होनी चाहिए । क्योंकि जीने की इच्छा का मतलब आपको मरना भी पडेगा, अतः दोनों से छुटना आवश्यक है, जिससे सुखस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति हो । अब प्रश्न है कि कौन से साधन हैं ?, जो मनुष्य को मुक्ति दिला सकते हैं । उन्हीं के शब्दो में – 'पूर्वोक्त ईश्वर की कृपा, स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना, धर्माचरण करना, पुण्यकर्म करना, सत्संग, विश्वास, परोपकारादि सब उत्तम कर्म करना और सब दुष्कृत्यों से दूर रहना, ये सब साधन मुक्ति के हैं ।'

यहां परमेश्वर की कृपा का पात्र बनना सर्वप्रथम आवश्यक है । उसके लिये स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना आवश्यक है । परमात्मा के गुणों का चिन्तन, मनन, ज्ञान, कथन, श्रवण, सत्यभाषण करना व उसके सत्य गुणों का वर्णन करना । इससे परमात्मा के प्रति प्रेम पैदा होता है, क्योंकि जिस किसी चीज के गुणों का हम चिन्तन करते हैं । बार – बार विचार करते हैं, उसके प्रति प्रेम उपन्न होता है, आकर्षण बढता है, उसकी और हम खींचे चले जाते हैं, उससे लगाव पैदा होता है । वह चीज हमें आनन्द देने लगती है । उससे हम एकरूप होना चाहते हैं, उसके गुणों में हम डूब जाना चाहते हैं, उसमें हम स्वयं को खो देना चाहते हैं । यह स्तुति का फल है ।

संसार में भी हम देखते हैं कि जिन भी चीजों के गुणों का हमें पता चलता है, उसके प्रति लगाव पैदा होता है, आसक्ति बढती है, उसके प्रति हम अपना हाथ बढाते हैं, यह एकदम स्वाभाविक है । बशर्ते हमें उसके गुणों का पता होना चाहिये । इसी प्रकार जब हमें परमात्मा के गुणों का ज्ञान होता है, उसके किये उपकारों का एहसास होता है, तो उसके प्रति स्वाभाविक खिंचाव पैदा होता है, ऐसा आकर्षण पैदा होना ही स्तुति का फल है, अर्थात् परमात्मा के प्रति प्रेम पैदा होना मुक्ति का साधन है ।

आगे है प्रार्थना का विषय । अपने पूर्ण पुरूषार्थ के पश्चात् उत्तम कर्म की सिद्धि के लिए परमेश्वर से सहायता की अपेक्षा रखना, उसको हृदय से पुकारना, अपनी असहाय स्थिति को परमेश्वर के सम्मुख रखना । यहाँ यह बात समझ लेनी चाहिए कि आपको पहले पूर्ण पुरूषार्थ करना पडेगा । जो पूर्ण पुरूषार्थ नहीं करेगा, उसे कभी भी अपने असहाय व अल्पशक्तिमान होने का ज्ञान नही होगा । खूब मेहनत के बाद ही जीवात्मा को अपनी अल्पशक्तिमत्ता का बोध होता है, जिससे जीवात्मा पूर्ण समर्पित होकर प्रार्थना करता है । जो कोई पूर्ण पुरूषार्थ नहीं करेगा, उसमें एक भ्रम हर पल रहेगा कि वह कुछ कर सकता है ! ऐसी स्थिति में उस जीवात्मा में प्रार्थना का फूल कभी खिलेगा नहीं ।

thearyasamaj.org

उससे जो अहंकारनाशरूपी सुगन्ध निकलनी चाहिए, वह कभी नही निकलेगी। क्योंकि स्वामीजी ने प्रार्थना का फल अहंकार का नाश व आत्मा में आर्द्रता आना लिखा है। साथ ही गुण ग्रहण करने की तीव्र इच्छा का होना, केवल अच्छा ही नहीं, अत्यत प्रीति पैदा होना से प्रार्थना के फल हैं। यहाँ विचारणीय बात यह है कि प्रार्थना से अहंकार का नाश होते ही व्यक्ति का मन लचिला, भीगा- भीगा सा ग्रहणशील बनता है, जिससे गुणों का ग्रहण भी त्वरित हो जाता है, व्यक्ति गुणवान बनता है व उसमें ईश्वर के प्रति अत्यंत प्रेम पैदा होता है। जीवात्मा ईश्वर का प्रेमी बन जाता है। प्रेमी बनकर ईश्वर के गुणों का चिन्तन करता है। जिससे ईश्वर के गुणों का आधान, गुणों की धारणा स्वयमेव अप्रत्यक्ष रूप में होती जाती है। स्वाभाविक जीवात्मा धार्मिकता को अपने जीवन में स्थान देती है, उससे उसका उर्ध्वगमन होता है तथा वह देवत्व को प्राप्त करती है। वह अच्छे लोगों का संग करता है व बुरे लोगों से दूर रहता है। परोपकार करता है, सभी उत्तम कर्म करता है। उसको सात्विक सुख की उपलब्धि होती है, जिससे उसका उत्साह दिन ब दिन बढता ही जाता है।

उसके बाद वह मनुष्य परमात्मा के अत्यंत समीप जाना चाहता है, उसे की **उपासना** कहते है। स्वामीजी के शब्दों में ईश्वर के आनंद में मग्न होना उपासना कहलाती हैं उपासना का अर्थ पास बैठना। परमात्मा के पास बैठना यह कोई सामान्य बात नहीं है। अगर किसी को अपने से अच्छे, बडे व्यक्ति के पास जाना हो तो बडा ही साफ सुथरा, सज-धज के जाने की सोचता है और हम ऐसी पूरी तैयारी के साथ जाते हैं। परमात्मा तो परमपवित्र है, हम उसके पास अपवित्र होकर कैसे जा सकते हैं ? उसकी हमें पूर्ण तैयारी करनी होती है। यम- नियमों का पालन करके अपने मन को पूर्ण पवित्र, स्वच्छ करना, राग द्वेषादि से मुक्त होना, सुख - दुःख में सम रहना, धर्म का अनुष्ठान करना, सत्यशास्त्रों का पढना - पढाना, इन सब बातों का पालन करके मन को पूर्ण पवित्र करके ही आप परमपवित्र परमेश्वर के पास जा सकते हैं, क्योंकि '**समानशील व्यसनेषु सख्यम्** ।' इस तरह जब व्यक्ति परमात्मा के पास बैठता है, तो उसे पहचान में आता है कि परमात्मा कैसा है ? इसके साथ ही मन को एक जगह पर रोकना भी आवश्यक हैं। ऐसा नहीं कि मन कहीं ओर और हम कही ओर ! इसके लिए धारणा, ध्यान, समाधि भी अत्यंत आवश्यक है। स्वामीजी ने उपासना के विषय में कहा हैं - **जब उपासना करनी चाहो, तब एकांत शुद्ध देश में जाकर आसन लगाकर,**

thearyasamaj.org

प्राणायाम करके, बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोककर, मन को नाभि, हृदय, कंठ, नेत्र, शिखा, पीठ के मध्य हड्डी में किसी स्थान पर स्थिर करके अपनी आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो जाना चाहिए । इस प्रकार ध्यान-धारणा करने से आत्मा और अंतःकरण पवित्र होकर सत्य से अर्थात् वास्तविकता से भरपूर हो जाता है, नित्य प्रति ज्ञान - विज्ञान बढकर मुक्ति तक पहुंच जाता है । इस प्रकार के कार्य से जीवात्मा, अपना जो लक्ष्य मुक्ति का है, उस तक पहुंचने में समर्थ होता है । उपासना का फल भी बहुत रोचक है । कहते हैं - **जैसे ठंड से पीडित व्यक्ति आग के पास जाता है, तो ठंड से मुक्त होता है, वैसे ही परमात्मा के पास जाने से परमात्मा के गुण, कर्म व स्वभाव जीवात्मा में आने लगते है** । जीवात्मा पवित्र हो जाता है । उसके सभी दोष छूट जाते हैं। साथ ही आत्मा का बल भी इतना बढता है कि बडे से बडे दुःखों से भी वह विचलित नहीं होता है । निर्भयता, प्रेम आदि बातें स्वाभाविक रूप से विकसित होती हैं, जिसके बिना हम सदैव दुःखी व भयभीत रहते हैं । भय का कारण समाप्त हो जाता है । क्योंकि जीवात्मा को यह जान होता है कि परमात्मा सर्वव्यापक, आनन्दस्वरूप व मेरे साथ सदैव है, मैं सदैव हूं, नित्य हूँ । मैं नित्य, और आनन्दस्वरूप परमात्मा नित्य तो फिर किस चीज की जरूरत है ? मैं भी निराकार, परमात्मा भी निराकार और मैं कर्मानुसार जन्म लेनेवाला चाहूँ, तो मोक्ष का पुरूषार्थ करके परमात्मा के आनंद मे सदा रहूँ, जीवन अवस्था में ही मृत्यु का भय समाप्त कर दूँ ! न दुःख, न सुख! नित्य आनंद में स्थित हो जाऊ ! ऐसे ही मनुष्य का सौभाग्य, जो कि अन्य योनियों में संभव नही हैं । यही तो हमारा लक्ष्य है । संसार तो केवल मात्र साधन है, जिससे हमें मोक्षरूप साध्य अर्थात् लक्ष्य को पाना हैं ।

-श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम,
परली/ ९८९०३५५३४९

स्व. श्रीमती मायर विधवा महिला सहाय्यता योजना

पूज्या स्व. श्रीमती शान्तिदेवी मायर (मिडैक्स-लन्दन) की स्मृति में महिलाओं के उत्थान के लिए सभा में श्रीमती शान्तिदेवी विधवा महिला सहाय्यता स्थिरनिधि स्थापित है। इसके लिये नियम है कि विधवा महिला यह भूमिहीन, नौकरी न करनेवाली, पुनर्विवाह न की हुई, पेन्शन न पानेवाली, अपनी मकान का किराया प्राप्त न करनवाली हो । साथ ही वह अत्यन्त गरीब व मजदूरी करके आजीविका चलानेवाली तथा बच्चोंवाली हो । इसके लिये किती जाति, पन्थ या मजहब का बन्धन नही है । अतः ऐसी इच्छुक महिलायें सहाय्यता हेतु अपने आवेदनपत्र सभा कार्यालय के पते पर भेंजें ।

thearyasamaj.org

दयानन्द की समकालीन विदुषी पंडिता रमाबाई

–स्व.डॉ.कुशलदेव शास्त्री

पंडिता रमाबाई (१८५८ – १९२२) के जीवन का लगभग पूर्वार्ध यायावरी और विद्याध्ययन में ही बीता, जब वे छः महीने की थीं, तभी से उनकी यह यायावरी शुरू हुई थी, उनके यायावर माता–पिता ने उन्हें बेत की टोकरी में डालकर अपनी पहले से चली आ रही यात्रा को पूर्ववत् चालू रक्खा था। मंगरूव्व, गंगामूव्व (कर्नाटक), मद्रास, कश्मीर, आसाम, ढाका आदि प्रदेशों में विचरण करती हुई वह कलकत्ता पहुँची। उसी समय पंडिता ने अपने पांडित्य और आशुकवित्त्व से कोलकत्ता शहर की सुप्रसिद्ध विद्वन्मंडली को आश्चर्य चकित कर समस्त भारतवर्ष का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

जब पंडिता की कीर्ति स्वामी दयानंद (१८२५–१८८३) के कानों तक पहुँची, तो उन्होंने उन्हें मेरठ आने का निमंत्रण ही नहीं दिया, अपितु पंडिता को सादर लिवा लाने के लिये पंडित देवदत्त शास्त्री को भी कोलकत्ता भेजा। पंडिता सन् १८८० में स्वामी के श्री चरणों में मेरठ पहुँची।

जिस समय पंडिता रमाबाई स्वामीजी के पास पहुँची तब उनके माता, पिता, भ्राता आदि आत्मीय जनों का निधन हो चुका था। पंडिता के मेरठ निवास काल में उनके (भावी) पति श्री विपिन बिहारीदास मेधावी भी उनके साथ थे। जब ४ फरवरी १८८२ को इनका भी निधन हो गया, तब प्रगतिशील महाराष्ट्र के साग्रह निमंत्रण को ध्यान में रखते हुए पंडिता रमाबाई ने मुंबई होते हुये अप्रैल १८८२ में महाराष्ट्र की काशी विद्वद् नगरी पुणे को अपना केन्द्र बनाया। पुणे में इन्होंने आर्य महिला समाज की स्थापना की। जिसकी शाखायें मुंबई, सोलापुर, पंढरपुर और अहमदनगर में भी खुली। पुणे में पंडिता ने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया, वह यह कि हंटर कमीशन के सामने भारतीय महिलाओं की व्यथा कथा को अपनी मातृभाषा मराठी में प्रस्तुत किया और उसे दूर करने की जबरदस्त मार्मिक अपील की। २० अप्रैल १८८३ को वे विशेष अध्ययन के लिए मुंबई से इंग्लैण्ड की ओर रवाना हुई। रवाना होने से पूर्व उन्होंने यह आश्वासन दिया था कि – 'सब धर्मों में कुछ न कुछ गलतियाँ हैं, अतः मैं हिन्दू धर्म को छोडकर कदापि ईसाई नहीं बनूँगी।' पर अभी छः महिने भी पूरे नहीं हुये थे कि वहाँ के ईसाइयों के सेवा कार्य से प्रभावित हो, उन्होंने २९ सितम्बर १८८३ को ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया।

१८८३ से १८८९ तक विदेश में

thearyasamaj.org

रहने के बाद पंडिता रमाबाई जब स्वदेश लौटी, तो महाराष्ट्र ने उसे **मेरी रमा** के रूप में पाया । रमा ने ११ मार्च १८८९ को मुंबई में शारदा-सदन की स्थापना की । इसी वर्ष मुंबई मे संपन्न कांग्रेस के अखिल भारतीय अधिवेशन में भी वे पहली बार महिला प्रतिनिधियों के साथ उपस्थित हुई और समाजसुधार के विषय में उन्होंने एक प्रभावपूर्ण भाषण दिया । कुछ समय मुंबई में रहने के बाद फिर उन्होंने पुणे को ही अपनी कर्मभूमि बनाया । शारदा सदन संस्था में माध्यम से पुणे (नवम्बर १८९०) में उपेक्षित नारियों को सुशिक्षित करने तथा उनके उपेक्षा के घावों को भरने का अभियान पंडिता द्वारा शुरू करते ही परंपरावादी महाराष्ट्र को ही नहीं, अपितु प्रगतिशील महाराष्ट्र को भी उनके कार्य से धर्मांतर की गंध आने लगी, फलस्वरूप लोकमान्य तिलक की लेखनी गरम हुई और रानडे-भांडारकर की प्रार्थना समाजी जोडी ने भी पंडिता रमाबाई की शारदा-सदन संस्था से अपना संबंधविच्छेद कर लिया ।

तत्पश्चात् पंडिता ने एकला चलो रे की भावना से पुणे से ४० किलोमीटर की दूरी पर स्थित केडगाँव में नारी-मुक्ति-सदन की स्थापना की । अपने स्नेही-सहयोगियों और पुणे को राम-राम करने से पूर्व उन्होंने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया । १८४६ में पुणे में फैले प्रलयी-प्लेग के समय ब्रिटिश सैनिकों ने नागरिकों पर जो अत्याचार किये थे, उसके विरूद्ध उन्होंने पूर्ण स्वाभिमान के साथ अपनी आवाज बुलन्द की, जिससे प्रभावित होकर लंदन में स्थित गोपाल कृष्ण गोखले ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध अपना अभियान शुरू किया । फलस्वरूप जाँच-समिति भारत आयी, पर उसने सारे आरोप झूठे सिद्ध कर दिये । जब प्रमाण देने के लिये श्री गोखले महोदय को कोई भी भारतीय मित्र नहीं मिला और जब उन्हें महसूस होने लगा कि अब ब्रिटिश सरकार से प्रकट क्षमा मांगनी पडेगी । तब एक भारतीय महिला **मेरी रमा** ही ऐसी थी, जिसने धैर्य और तेजास्विता के साथ श्री गोखले का साथ दिया था ।

मेरी रमा ने अपना शेष सारा जीवन **नारी मुक्ति सदन** के लिए **इदन्न मम** की भावना से समर्पित किया । **अबला जीवन हाय कहानी** को दूर करने के लिए अब वह पूर्णतया स्वतंत्र थी । **स्वतंत्र कर्त्ता** हो जाने के बाद अब उसके धर्मांतर के अभियान पर किसी के द्वारा अंकुश लगाने का प्रश्न ही शेष नहीं रह गया था। पुणे में प्लेग फैला, गुजरात, मध्यप्रदेश में भयंकर अकाल पडा । जहाँ जहाँ भी आवश्यकता हुई मेरी रमा दौडी-दौडी पहुंची । केड गाँव के मिशन में भूखे-रोगी कंकालो की सैकडो-हजारों की संख्या में भीड आने लगी । सन् १९०५ में २२० कुमारी माता उनके मुक्ति-सदन में थी । अपनी मिशनरी सहयोगियों की सहायता से मेरी रमा ने इन सबको माँ

thearyasamaj.org

का ममत्व व वात्सल्य दिया ।

काश ईसाइयों की तुलना में इस समय का भारतीय समाज महिलाओं के प्रति अधिक उदार होता, तो उसे **पंडिता रमाबाइयों** को तो **मेरी रमाओं** में कदापि परिवर्तित होते हुये देखना न पडता । पंडिता का यह दौर्भाग्य रहा कि ज्ञानी पिता, स्नेही माता, सरल भ्राता, रसिक पति, स्वामी दयानन्द से गुरू और रानाडे-भांडारकर-महात्मा फुले जैसे सहयोगी मिलने के बावजूद भी उनका समस्त जीवन रूखा-सूखा, वीरान और उपेक्षित सा ही रहा और उनके द्वारा अधीत संस्कृत विद्या का लाभ भारतीय महिलाओं के लिये उल्लेखनीय रूप में उपयोगी नहीं हो सका ।

पंडिता रमाबाई के विषय में मराठी के सुप्रसिद्ध पत्रकार आचार्य प्रह्लाद केशव अत्रे ने लिखा है कि - **यह सत्य है कि पंडिता ने हिन्दू धर्म का त्याग कर अंत में ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया, पर केवल इसी कारण उनके शेष महद् कर्तृत्व को बाधा पहुँचती है, ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं कह सकता** । इसी विषय के आगे वे लिखते है- **पंडिता ने ईसाई धर्म स्वीकार कर निस्संदेह भारतीय ईसाई समाज की बहुत बडी सेवा की है, पर जिस हिंदू समाज में उनका मूल रूप से जन्म हुआ था, जिस हिंदू समाज ने उनके पांडित्य का विशेष गुण-गौरव किया, उस समाज को उनकी असाधारण बुद्धि का, ज्ञान का और कर्तृत्व का बिल्कुल भी फायदा नहीं हुआ** । यह खेद के साथ कहना पडता है कि धर्मांतर न करते हुये यदि पंडिता रमाबाई ने विद्या दान और समाज सुधार का कार्य स्वसमाज में किया होता, तो विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, रानडे, तिलक, आगरकर और महर्षि कर्वे की मालिका में पडिता रमाबाई का नाम भी निस्संदेह पिरोना पडता था ।

स्वामी दयानंद की तुलना में पंडिता रमाबाई के जीवन वृत्त से सामान्य पाठक सुपरिचित नहीं हैं, अतः पंडिता का संक्षिप्त परिचय उपरोक्त पंक्तियों में दिया गया है ।

●●●●

सभा की अन्तरंग व साधारण सभा बैठक - सूचना

महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा के अन्तरंग सदस्यों तथा साधारण सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सभा की अन्तरंग तथा साधारण सभा बैठक रविवार दि. २२/२/२०१५ को आर्य समाज, सम्भाजीनगर (औरंगाबाद) में आयोजित की गई है ।

***अन्तरंग सभा बैठक - प्रातः १० बजे * साधारण सभा बैठक - दोप. २ बजे**

अतः अन्तरंग एवं साधारण सदस्यों से निवेदन है कि वे इन बैठकों में अवश्य उपस्थित रहें तथा इन्हें सफल बनावें । **- माधव देशपांडे** (मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा)

thearyasamaj.org

'लव जिहाद' की वास्तविकता

–डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी

आजकल लव जिहाद की चर्चा सर्वत्र है। वैसे तो जिहाद का संदर्भ ही धर्म की रक्षा के लिये होता है। ईमानदारी की बात यह है कि सत्य, शाश्वत, स्वाभाविक धर्म जो कि सार्वभौम, मानवतावादी, आत्मकल्याण का है। जो वेद का मार्ग है, वही धर्म आज छूट गया है। अब धर्म यह शब्द वेदमार्ग को छोडकर आत्मकल्याण के बजाय आत्महननवाला बन गया है। आजकल तो असत्य, अज्ञान, अंधविश्वास और संकुचितता को ही धर्म कहा रहा है और उसके लिए जिहाद याने कि **मर-मिटने के लिए तैयार रहो,** ऐसा कहा जा रहा है। धर्म तो अच्छाई, सत्य, आत्मकल्याण, वेद के मार्ग आदि की रक्षा करने के लिये बात करता है। वेद ने भी यही कहा है, परन्तु वहाँ पर दुष्टों को दण्डित करने के लिए धर्म का प्रयोग किया गया है। खैर अब कुछ साम्प्रदायिक लोग मूल उद्देश्य से दूर व अतिदूर जा रहे हैं। वैसे तो ये कभी के दूर जा चुके हैं।

लव की जो बात है, वह स्त्री-पुरूष के सम्बध के बारे में है। एक दूसरे को चाहने व पसंद करने को लव (प्रेम) कहते हैं। परमात्मा ने इस सृष्टि में नर-मादा के जोडे बनाये हैं। मनुष्यों में भी स्त्री-पुरूष का जोडा बन गया है। इनमें कामभाव पैदा किया है, जिसके माध्यम से ये परम्पर आकर्षित होते हैं। एक दूसरे को पसंद करके विवाह भी करते हैं अथवा विवाह के बिना भी आपस में प्रेम करते रहते हैं। प्रेम, विवाह व अन्त में है प्रजा (संतति)! इस प्रेम में कोई जाति, पंथ, मजहब, मत-मतांतर, प्रांत या देश आदि का बंधन नही रहता है, यह ईमानदारी की बात है। प्रेम की इच्छा यह सार्वभौम होती है। किसके साथ, कब प्रेम होवें, यह कह नहीं सकते ? यह व्यक्तिगत, स्वाभाविक व निसर्गतः स्वतंत्र है, किंतु वेद ने इसके लिये स्वतंत्रता के साथ ही कल्याण हेतु संयमित रहकर गृहस्थाश्रम व्यतीत करने को कहा है।

अब इस पर जाति, पंथ, मत, प्रांत, देश आदि के बंधन डालना, मानों व्यक्ति की स्वतंत्रता पर ही बंधन डालना है। यह एक तरह से गलत है। इसलिए वैदिक व्यवस्था में स्वयंवर विवाह होते थे। वे विवाह भी लडके - लडकियों के गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित तथा एक दूसरे की सम्मति व पसंदगी से होते थे। अब यदि आज इसका कोई दुरूपयोग करता हो, तो वह गलत है। प्रेम (लव) की आड में कोई अज्ञान, असत्य, मत-पन्थ व जाति आदि

thearyasamaj.org

की संख्या बढाने के लिये प्रयास करता हो, फंसाता हो, तो वह बिल्कुल गलत है। यदि मुसलमान लोग लव जिहाद का नाम लेकर अपना मजहब फैलाने की बात करते हैं, तो वह भी गलत है।

इसके साथ ही जो हिन्दू इसके विरोध में आवाज उठा रहा है, उनकी आन्तरिक बात कुछ और है। हिन्दू ने अपना आधार जन्म से रखा है। जन्म से हिन्दू, उसमें भी जन्म से वर्ण, फिर जन्म से पन्थ, मत, जाति आदि! और विवाह के समय भी जन्म से जाति-जाति में, वर्ण-वर्ण में और मत-मत में नाते रिश्ते आदि। इसमें भी हर एक परिवार उंच-नीच की बात करता है। फिर इन सभी पर नियंत्रण रखने के लिये धर्मगुरू, जातिपंचायतें, फिर उसकी दण्डव्यवस्था साथही बहिष्कृत करने, मृत्युदण्ड देने व तुच्छ समझने की बातें होने लगी। इन सम्प्रदायवालों ने धर्म के नाम पर अपने लोगों पर ही अत्यधिक अन्याय व अत्याचार किये हैं। स्वकीय लोगों को अज्ञान, अन्धविश्वास, अविद्या आदि में धकेलकर उन पर अपना अधिकार जमाया है। छुआछूत, जातिवाद आदि के कारण अपमानित हुए लोग अपने मजहब व जाति छोडकर दूसरे पंथों में चले गये, यदि वे मुसलमान व ख्रिश्चन हुए, तो यही हिन्दू जिन्हें अछूत समझता था, अपमानित करता था, उन्हीं को अब भोजन तथा अन्य सामाजिक कार्यक्रमों प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में बुलाकर उनका सम्मान करता है। इसी नीयत से बडे पैमाने पर धर्मांतर हुए। यदि वे बच्चे- बच्चियां गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर विवाह करना चाहते हैं, और उन्हें समाजवालों ने ही सम्मति नहीं, तब अनेकों लडकों व लडकियों ने आत्महत्याएं की अथवा घर व जातिवालों ने उन्हें मार डाला हैं। साथ ही धर्मांतरण भी कर लिये गये। बंगाल का काला पहाड इसी का उदाहरण है। प्रेम प्रकरण में कोई हिंदू की महिला मुसलमान से प्यार करती है, तो वह उसकी रखेल के रूप में रखी जाती, तो उसकी संतानों को हिंदुओं ने मुसलमान ही बना दिया। इसके विपरीत हिंदू पुरूष ने मुसलमान की महिला से प्रेम कर उसे अपने रखेल के रूप में रखा, तो उसकी संतान भी मुसलमान ही बनाई गयी। अनेकों प्रेम युगल जिन्हें हिन्दुओं के धर्मगुरूओं व जाति- पंचायतों ने उनके विवाह को सम्मती नहीं दी। इस कारण उन दोनों ने एक साथ ही आत्महत्याएं कर ली है। इससे भी हिन्दू की संख्या घटती गई।

आज भी विज्ञान के युग में व महर्षि दयानन्द की कृपा से वेदाध्ययन व

thearyasamaj.org

शिक्षा के द्वार सबके लिये मुक्त हुए हैं। नीचली व अछूत समझे जानेवाली जाति की लडके - लडकियां अच्छी तरह से पढ रही हैं। वे सुयोग्य डॉक्टर, इंजिनीअर, वकील, न्यायाधीश, अधिकारी बन रहे हैं उनकी योग्यता के अनुसार यदि उन्हें योग्य जीवनसाथी, चाहे वह किसी भी वर्ण या जाति का क्यों न हो, यदि वे अपने जातिबंधन को तोडकर विवाह करना चाहते हो, तो क्या उन्हें जातिवाले लोग, जातिपंचायतें, धर्मगुरू, सम्मति देते हैं ? नहीं ! इसके विपरीत उन्हें मार डाला जाता है। यह कौनसी मनोवृत्ति है ? कौनसा न्याय है ? यदि ये प्रेमीयुगल माता-पिता को पूछे बगैर धर्मांतर कर विवाह कर लेते हैं, तो फिर रोना-धोना किस काम का ?

आजकल शिक्षा प्रसार बहुत अधिक हुआ है। हर एक के विचार, गुण, कर्म व स्वभाव आदि अलग -अलग बनते हैं। सहशिक्षापद्धति, कार्यालय अथवा कम्पनियों में एक साथ नौकरियां करना, साथ-साथ घूमना-फिरना, इसके साथ ही आधुनिकता का वातावरण, पाश्चात्य् संस्कृति का हर एक व्यक्ति समूह अथवा हर घर में पहुंचना आदि कारणों पर विचारकर अब धर्मगुरूओं कों अपनी सोच बदलनी चाहिये। बदलते परिवेश में जाति पंचायतों, विशेषतः हिन्दुओं ने गंभीरता से सोचना व विचार करना चाहिए, किंतु हिंदुओं का दुराग्रह हटता नहीं। ये लोग अपने अज्ञान, अंधविश्वास, नीच मनोवृत्तियों, संकीर्णता, जातिभेद की भावना, अन्याय-अत्याचार आदि वृत्तियां नहीं छोडतें। हिन्दुओं के उपर्युक्त दोषों व दुराग्रह के कारण प्रतिक्रियारूप में बौद्ध, जैन, चार्वाक, मुसलमान, ख्रिश्चन , पारसी आदि सम्प्रदाय बन गये। इस कारण हिन्दुओं की संख्या घट गई है। फिर भी हिन्दू अभी तक जागा नहीं है। इतना होने पर भी क्या हिन्दुओं के बौद्ध, जैन, सिख, लिंगायत, आर्यवैश्य, मराठा, धनगर, ब्राह्मण, क्षत्रिय, कुम्हार, वंजारा, दलित आदि जातियों में आपस में विवाह सम्बध होते हैं ? क्यों नहीं ? फिर मुसलमान लव जिहाद के माध्यम से अपनी संख्या बढा रहा है, तो अब हिन्दू स्वयं को क्यों नहीं सम्भाल रहा है ? हिन्दुओं में विद्यमान में चाणाक्ष लोग अपना स्वार्थी मतलब छुपाकर भोलेभाले लोगों की भावनाओं को भटकाकर लडने लगाते हैं और अपनी बातें चलाते हैं।

लव जिहाद निश्चित ही बुरा है, घातक है। अतः हिन्दुओं को अपना घर सम्भालने के लिये प्रयास करना चाहिए। अपने घर में विद्यमान, अज्ञान, अन्धविश्वास, अन्याय, अत्याचार, असत्य वेदविरूद्ध व सृष्टिविरूद्ध बातें, जिनके कारण

thearyasamaj.org

धर्मांतरण हो गया, हो रहा है और होगा । इनको दूर करना चाहिए । इन बातों में हमारे लोग क्यों नहीं सुधार करना चाहते ? लव जिहाद के नाम पर माता-पिता, जातपंचायतें, धर्मगुरू आदि लोग प्रेमविवाह पर पाबंदी लाना चाहते हैं । ये लोग अपने कुल की झूठी प्रतिष्ठा, दम्भवृत्ति, अपना वर्चस्व आदि सम्भालकर रखना चाहते हैं । ईमानदारी की बात यह है कि अपने कि जिन कुलों को वे श्रेष्ठ कहते हैं, उन घरों में दुर्व्यसन, असभ्यता आदि बातें बडे पैमान पर नजर आती है । आज भी उन घरों में पाश्चात्य संस्कृति, आधुनिकता व स्वैराचार बढता नजर आ रहा है । यह प्रामाणिक बात है कि हिन्दुओं की नई पीढी अपने कौटुंबिक संकुचित विचारों को पसंत नही करती । वे उनका अवमूल्यन करती है । माता-पिता की बातें नहीं मान रही हैं । हिन्दुओं को इसपर गम्भीरता से सोचना चाहिये ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत पहले बताया था कि आर्यावर्त देश में विवाह गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर होते थे, जिसमें माता-पिता के सम्मति के साथ ही वधु-वर की पसंदी को महत्व था । वहां कहीं पर भी जाति-पाति या मतपन्थ का बखेडा नहीं था ।

आर्य समाज इस जातिनिर्मूलन के लिये अन्तर्जातीय विवाह का आन्दोलन चलाता है । इसमें माता-पिता की सम्मति को गौण स्थान रहता है । यह संस्था जाति, पन्थ, मत, बंधन को तोडकर गुणकर्म, व स्वभाव के आधार पर उचित आयु होने पर विवाह लगाती है । जातिवादी व पन्थवादी लोगों के अन्याय व अत्याचारों के कारण लडके-लडकियां व्यर्थ न मर जावें, धर्मान्तरण न करें । इस व्यापक दृष्टिकोन को सामने रखकर आर्यसमाज वेदमार्गानुसार वैदिक विवाह संस्कार करवाती है, तो भी हिन्दुओं का इसे विरोध क्यों ? आर्य समाज पर कोर्ट केस किसलिये ? इससे इनकी दुर्भावनाएं क्या हैं, इसका पता चलता है । इन हिन्दुओं के अन्याय व अत्याचार के विरोध में समाज सुधारकों ने आन्दोलन किये । सरकार ने भी योग्य न्याय दिया और कानून बनाया । विवाह के बारे में लडके - लडकियों को अधिकार दिये । १८ वर्ष के उपर की लडकी और २१ वर्ष के उपर का लडका ये दोनों स्वेच्छा से एक दूसरे को पसन्द कर मानवता के आधार पर विवाह कर सकते है । इसमें माता-पिता की प्रसन्नता पूर्वक सम्मति को स्थान है । किन्तु यदि विरोध हो तो सम्मति की आवश्यकता नहीं है । इसके भी विरोध में जातिपंचायते व हिन्दुत्ववादी लोग काम कर रहे हैं । पहले बालविवाह

thearyasamaj.org

करके अनेकों की जिन्दगी बरबाद कर रहे थे, इसलिये सरकार ने बालविवाह पर पाबन्दी लगाई, तो इन जातिवालों ने इसका भी विरोध किया । आज भी कहीं कहीं बालविवाह हो रहे हैं । यहां पर भी इनका हेतु क्या है, यह अवश्य देखे ? कुलमिलाकर हिन्दुओं का दृष्टिकोन स्वार्थी है । उच्चभ्रू लोग अपना साम्राज्य टिकाना चाहते हैं, यही उनका उद्देश्य है ।

इनके अज्ञान, अन्धविश्वास, अत्याचार, अन्यायरूपी विचारों को सहजतासे **धर्म** का नाम दिया जाता है । ऐसे धर्म को बचायें रखने की प्रेरणा दी जा रही है । ऐसी ही भावना जागृत करके अनेकों ने इन्हें बचाने के लिये बलिदान दिये, यातनाएं भोगी व मृत्युदण्ड भी स्वीकार किये । इतना होने पर भी क्या इनमे अंदरूनी सुधार हुआ है ? बिल्कुल नहीं । इनका धर्मांतरण को विरोध भी ऐसा ही मतलबी है । घर वापसी का नारा देना भी व्यर्थ ही है । जो लोग घरवापसी करेंगें, उन्हें ये जातिवादी लोग न्याय नहीं दे सकेंगें । इन्हें ये लोग कहां रखेगें ? इनकी जाति, ईश्वर, धर्मग्रन्थ, स्मशानभूमि, साधना, पूजा - पाठ आदि-आदि कौन से होंगें ? इनके बच्चे-बच्चियों के विवाह किनके साथ होंगें ? इनकी प्रतिष्ठा व मान-सम्मान का क्या होगा ? ये पाखण्डी लोग कहेंगे - 'जिसमें धर्मान्तर किया, उसी धर्म व जाति में पुनः लौट जाओ ।' दुर्भाग्य से वे पन्थ व जातिवाले लोग भी इन्हें अपना नहीं समझेंगें । नीच समझकर अपमानित करेंगें । तो घर वापिस आनेवाला क्या दुःखी नहीं होगा ? पश्चाताप करके वह फिर से बाहर जाने की क्यों नहीं सोचेगा ? वेद का पवित्र मार्ग, जो कि स्वामी दयानन्द ने हमें बताया, वही श्रेष्ठ मार्ग है, सारी दुनियांवालों को आज नहीं तो कल इसे स्वीकरना ही पडेगा ? हिन्दू वेद को मानता है, किन्तु वेदमार्ग को नहीं स्वीकारता और न ही आचरण में लाता है । इसमें भी उनकी छिपी दुष्ट मनोवृत्ति ही नजर आती है । महर्षि दयानन्द को यही लोग अपना शत्रु समझते हैं और इनका नाम तक नहीं लेना चाहते ।

सृष्टि में ईश्वर एक है । धर्म और जाति भी एक है । आत्मकल्याण का लक्ष्य व वेदमार्ग यह भी एक ही है । वेद ही हमारे प्राचीन सत्य सनातन धर्मग्रंथ हैं । महर्षि दयानन्द प्रतिपादित इस विशुद्ध वेदज्ञान को माने बिना देश व दुनियां की समस्याएं हल नहीं हो सकती और मानवमात्र को सुख, शांति, आनन्द, मोक्ष, मुक्ति आदि नहीं मिलेगी और सारा जीवन व्यर्थ ही जायेगा । अतः हमे सत्य वेदमार्ग को ही स्वीकारना आवश्यक है ।

आर्य समाज, परली-वै.
०९४२१९५१९०४

●●●●●

thearyasamaj.org

रामपालजी लोहिया जन्मदिवसपर नेत्रशिविर

आर्य समाज परली के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम के आधारस्तंभ, प्रान्तीय सभा के सहयोगी व उदारमना श्रेष्ठी श्री रामपालजी लोहिया का ८६ वां जन्मदिवस दि. २९ जनवरी २०१५ को समाजोपयोगी व परोपकारी उपक्रम-**दृष्टिदानयज्ञ** के रूप में सोत्साह मनाया गया। मुम्बई के विख्यात जे.जे. अस्पताल के सहयोग से लोहिया परिवार ने परली में हजारों नेत्ररूग्णों के लिए **निःशुल्क नेत्रचिकित्सा शिविर** लगाया । प्रसिद्ध नेत्रविशेषज्ञ पद्मश्री डॉ.तात्यारावजी लहाने (अधिष्ठाता, जे.जे.अस्पताल मुंबई) के प्रमुख नेतृत्व में आयोजित इस शिविर में परली व परिसर के लगभग ७ हजार नेत्ररोगियों की जांच व चिकित्सा तथा लगभग १ हजार रूग्णों के मोतिया बिंदू आपरेशन किये गये । इस कार्य में जे.जे.अस्पताल नेत्रविभागप्रमुख डॉ. रागिनी पारीख तथा उनके २० डॉक्टर्स टीम व स्थानिक उपजिल्हारूग्णालय के चिकित्सकों की देखरेख में यह शिविर बहुतही सफलता के साथ सम्पन्न हुआ ।

लगभग तीन दिनों तक चले इस भव्य शिविर का पुरा आर्थिक भार लोहिया परिवार वहन किया ।

शिविर का उद्घाटन बीड जिले के सांसद डॉ.प्रीतमदीदी गोपीनाथराव मुण्डे (खाडे) के शुभकरकमलों से हुआ तथा समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजीने की । आरम्भ में पं. प्रशान्तकुमारजी शास्त्री के पौरोहित्य में **आयुष्कामेष्टि यज्ञ** सम्पन्न हुआ । मुख्य यजमान श्री रामपालजी एवं सौ. कौशल्यादेवी लोहिया ने इस यज्ञ में श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की । यज्ञ में लोहिया परिवार के तीनों सुपुत्र, पुत्रवधुओं तथा दामाद, कन्याओं व पौत्र-पौत्रियों के साथ ही सांसद डॉ.प्रीतमदीदी मुंडे, डॉ. लहाने, डॉ. रागिनी पारीख, विधायक आर.टी.देशमुख आदियों ने आहुतियां दी ।

उद्घाटन समारोह में श्रीमती मुण्डे व डॉ. लहाने ने लोहिया परिवार द्वारा सामाजिक, धार्मिक व लोकोपयोगी कार्यों में दिये गये योगदान की चर्चा करते हुए उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की व आर्यश्रेष्ठी श्री रामपालजी व श्रीमती कौशल्यादेवीजी का अभिनन्दन कर उनके सुस्वास्थ्य व दीर्घायु की कामना की । अध्यक्षीय समापन भाषण में डॉ.ब्रह्ममुनिजी ने लोहिया परिवार को

thearyasamaj.org

समाज का गौरवस्थान बताकर डॉ.तात्याराव लहाने व डॉ.रागिनी द्वारा निरन्तर दिये जा रहे नेत्ररूग्ण सेवा कार्यों की प्रशंसा की ।

●●●●●

शोक समाचार आचार्य प्रवीणजी को मातृशोक

स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम के आचार्य श्री प्रवीणजी की माताजी श्रीमती प्रभावतीबाई विश्वनाथ व्यवहारे का ग्राम चिंचोली (बल्लाळनाथ) ता.जि. लातूर में दि. २२ जनवरी २०१५ को रात्रि में १० बजे वृद्धापकालीन रूग्णावस्था के कारण देहावसान को गया । गत ३-४ माह से वह बिमार चल रही थी । मृत्यु के समय माताजी की आयु ८५ वर्ष की थी । उनके पश्चात् तीन पुत्र सर्वश्री राजाभाऊ (कृषक- चिंचोली ब.), आचार्य प्रवीणजी, महिपालजी (संस्कृताध्यापक-औरंगाबाद) तथा तीन कन्याएं सौ. सरूबाई काळे (अणदुर), सौ. मणिकर्णिका डोंगरे (कुमठा) व सौ. सुवर्णा डोंगरे (जळकोट) एवं पौत्र - नप्त्रादि परिवार विद्यमान है। दिवंगत माताजी के पार्थिवपर दूसरे दिन प्रातःअन्तिम संस्कार किये गये । सभाप्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी व वैद्य विज्ञानमुनिजी ने चिंचोली ग्राम पहुंचकर आचार्य प्रवीणजी एवं परिवारों की सात्वना भेट की व माताजी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये ।

डॉ. निखिल गोजे की सडक दुर्घटना में मृत्यू

बोधन (जि. निजामाबाद- तेलंगना) के निवासी एवं आर्य कार्यकर्ता श्री सुधीरजी गोजे के नौजवान सुपुत्र एवं हैद्राबाद में कार्यरत भूलविशेषज्ञ डॉ.श्री निखिल गोजे का दि.२७ फरवरी २०१५ को रात्रि में लगभग ९.३० बजे सडक दुर्घटना में दुःखद निधन हुआ । उनकी आयु मात्र २७ वर्ष की थी । वे अपने पश्चात् पत्नी, माता-पिता, बहन, दादी आदि परिवार को छोडकर अकस्मात परलोक सिधार गये । श्री निखिलजी उस दिन हैदराबाद के समीपस्थ करीमनगर ग्राम में सेवारत डॉक्टर पत्नी से मिलकर निजी कारवाहन से हैदराबाद जा रहे थे । रास्ते में ही सामने से आनेवाली ट्रक से उनकी कार टकरा गई और उसी जगह श्री डॉ. निखिलजी कालकवलित हो गये । इस आकस्मिक मृत्यु से गोजे परिवार को गहरा आघात पहुंचा है चि. निखिल लातूर की आर्य कार्यकर्त्री श्रीमती सुमति जगताप के दौहित्र थे । उनके पार्थिव शरीरपर दूसरे दिन बोधन में अत्यंत शोकाकुल वातावरण में वैदिक पद्धतिसे अन्तिम संस्कार किये गये ।

दिवगंत आत्माओं को प्रान्तीय सभा की ओर से भावपूर्ण श्रद्धाजंलि ।

thearyasamaj.org

हत्या पर कडा दण्ड

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरूषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो सोऽवीरहा ।।

अथर्व. १/१६/४

जो दुष्ट हमारे गो-धन, अश्व-धन और मनुष्यों का विनाश करता है, उसे हमें सीसे से (गोलीसे) बींध देना चाहिए । (यहाँ सबसे पूर्व गौ को गिनाया गया है ।)

प्रान्तीय सभा द्वारा ग्रीष्मावकाश में विभिन्न स्थानों पर

८ संस्कार शिविर, कन्या संस्कार व प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर- सूचना

प्रान्तीय सभा ने पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरूजी) के गौरव में राज्य में ८ स्थानों पर दो विभागों में **मानवता संस्कार एवं आर्यवीर दल शिविरों** का आयोजन किया है । साथही **कन्या संस्कार शिविर** व युवकों के लिये **प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर** भी होंगें । इन शिविरों मे मान्यवर विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया है । शिविरों के कार्यक्रम निम्न प्रकार से -

शिविरों की तिथियां	**स्थान** (विभाग १)	**स्थान** (विभाग २)
१) २७ अप्रैल से ३ मई २०१५ -	औराद (गुंजोटी)	परभणी
२) ४ से १० मई २०१५ -	औराद (शहा.)	हदगांव
३) ११ से १७ मई २०१५ -	शिवणखेड	देगलूर
४) १८ से २४ मई २०१५ -	गांधी चौक लातूर	धर्माबाद
५) २५ से ३१ मई २०१५ -	किल्ले धारूर	उदगीर

दि. १ से ७ जून २०१५ - प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर-श्रद्धनन्द गुरूकुल, परली

दि. १ से ७ जून २०१५ - कन्या आर्य वैदिक संस्कार शिविर-आर्य समाज, हिंगोली

अतः सभी माता- पिताओं तथा आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे अपने पुत्रों एवं कन्याओं को सुसंस्कारित करने हेतु उपरोक्त शिविरों में अवश्य भेजें ।

विशेष - सभी शिविरों के सूचनापत्र सभी आर्य समाजों को भेजे गये हैं, जिसमें सहयोगी आर्य समाजों की सूचि जारी की गयी है । अतः सभी आर्य समाजें मिलकर शिविरों को सफल बनावें ।

विनीत - सभी पदाधिकारी,सभा

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृततेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश

तीन अनादी तत्व

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां स्वरूपाः ।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः ॥

प्रकृती, जीव व परमेश्वर हे तिघेही अज आहेत. अज म्हणजे ज्यांचा जन्म कधी होत नाही आणि हे कधी जन्म घेत नाहीत. अर्थात हे तीन्ही अनादी असून साऱ्या जगाचे कारण आहेत. यांना कोणी कारण नाही. या अनादी प्रकृतीचा उपभोग अनादी जीव घेतो आणि त्यात गुरफटतो, परंतु परमेश्वर प्रकृतीचा उपभोग घेत नाही अथवा तिच्यात गुरफटतही नाही.

(श्वेताश्वेतर उपनिषद- ४/५)

दयानंदांची अमृतवाणी

'आर्य समाजा' मुळेच सर्वांची प्रगती

म्हणून या देशाची उन्नती व्हावी, असे तुम्हाला वाटत असेल तर तुम्ही आर्यसमाजाशी सहकार्य करून त्याच्या उदि्दष्टानुसार आचरण करण्यास सुरूवात करा. नाही तर तुम्ही कांहीही करू शकणार नाही. कारण तुम्ही व आम्ही मिळून देशोद्धाराचे काम केले पाहिजे. ज्या देशातील पदार्थांनी तुमची-आमची शरीरे बनली आहेत, आज त्यांचे पालनपोषण होत आहे व यापुढे होणार आहे, त्यांची आपण सर्वजण मिळून तन-मन-धनाने व प्रेमाने उन्नती करू या.

आर्यावर्त्ताची उन्नती करण्यास **'आर्य समाज'** जसा समर्थ आहे, तसा दुसरा कोणताही समाज, संस्था अथवा संघटना असू शकत नाही. या समाजाला तुम्ही यथोचित साह्य कराल, तर ती फार चांगली गोष्ट होईल. कारण समाजाला भाग्यशाली बनविणे, हे समुदायाचे काम असते.

ते एकट्या दुकट्याचे काम नसते.

(सत्यार्थ प्रकाश - अकरावा समुल्लास)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः

- जीवनाची वास्तविकता -

आयुः कल्लोललोलं कतिपयदिवसस्थायिनी यौवनश्रीः
अर्थाः संकल्पकल्पा धनसमयतडिद्विभ्रमा भोगपूराः ॥
कण्ठाश्लेषोपगूढं तदपि च न चिरं यत्प्रियाभिः प्रणीतम्
ब्रह्मण्यासक्तचित्ता भवत भवभयाम्भोधिपारंतरीतुम् ॥३४॥

अर्थः- आयुष्य हे पाण्याच्या लहरीप्रमाणे चंचल आहे, तारूण्याची शोभा काही दिवस राहणारी, अक्षयी नव्हे, विषय हे मनातील संकल्पाप्रमाणे क्षणभंगुर असतात, भोगांचे समुदाय पावसाळ्यातील विजेप्रमाणे चमकून नाहीसे होणारे आहेत. आणि प्रिय स्त्रीयांनी गळ्याचे ठायी केलेले जे दृढ आलिंगन आहे, ते देखील क्षणभंगूरच ! याकरिता या संसाररूपी भयसागरा तरून जाण्याकरिता परमेश्वराच्या ठायी आपले चित्त स्थिर (एकाग्र) करा. (भर्तृहरिकृत वैराग्यशतक - ३४)

गाथा वाचू दयानंदाची **बोधकथा क्र. ५६**

मृत्युंजयी दयानंद महाप्रस्थानाच्या मार्गावर

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

जो दुःखदायी प्रसंग टाळण्यासाठी भक्त डॉ. लक्ष्मणदासांनी आपली पूर्ण शक्ती पणाला लावली आणि योग्यता व औषधीय ज्ञान या सर्वांचा प्रयोग मोठ्या जिकीरीने केला, तो दुःखयोग शेवटी जवळ येऊन ठेपलाच ! तो दिवस कार्तिक अमावस्येचा, म्हणजेच (१९४० विक्रम संवत्) दि. ३० ऑक्टोबर १८८३ मंगळवारचा होता. सकाळीच भक्तगणांनी चौकशी केली, तेंव्हा स्वामीजींनी आज आपले शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम असल्याचे सांगितले, पण ही तर मृत्यूच्या अगोदर दिव्याच्या ज्योतीमध्ये आलेली अल्पकालीन चमक ठरली स्वामीजी शेवटपर्यंत प्रसन्नवदनी होते. त्यांनी आपला शेवट जवळ आल्याचे जाणून भक्तांना व शिष्यांना जवळ बोलावले. लाहोरच्या आर्य समाजातर्फे महाराजांच्या सेवेसाठी लाला जीवनदास व पं. गुरूदत्त विद्यार्थी यांना विशेषत्वाने पाठविले होते. स्वामीजींनी पं. भीमसेन, स्वामी आत्मानंद यांसारख्या सर्व शिष्यवृंदांना आशीर्वाद देऊन कृतार्थ केले. डॉ. लक्ष्मणदासांना कांही पारितोषिक देण्याची इच्छा व्यक्त केली, तेंव्हा भावनाविवश झालेल्या भक्त डॉ. लक्ष्मणदासांच्या डोळ्यातून अश्रुधारा वाहू लागल्या । त्यांनी एवढेच म्हटले - **महाराज ! मी माझ्या रोमा-रोमाची आहुती देऊन ही जर काय आपल्या पवित्र देहाचे रक्षण करू शकलो, तर माझे जीवन निश्चितच सार्थक होईल.** तेंव्हा

thearyasamaj.org

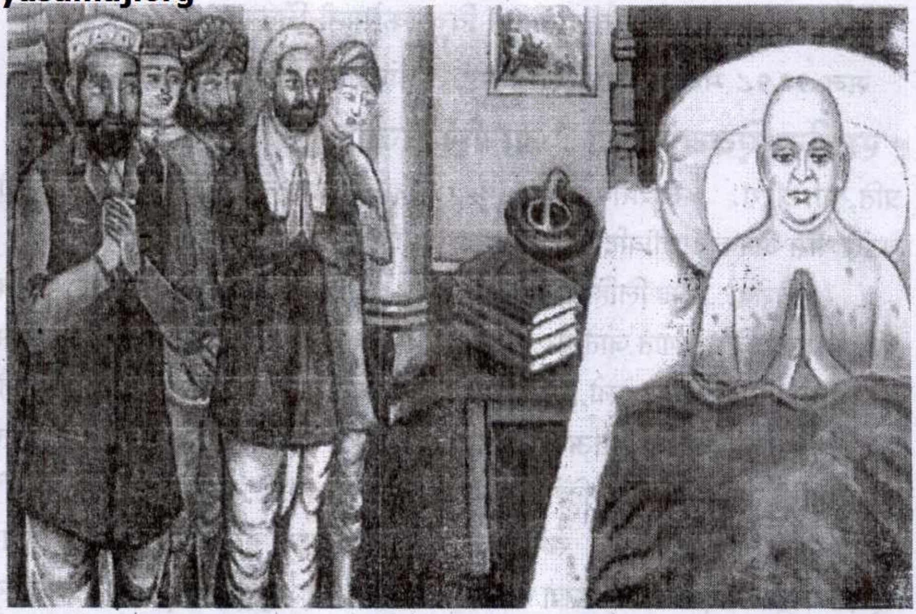

स्वामीजींनी त्या डॉक्टरास शोक आवरण्यास सांगितले व अंथरूणावर ध्यानस्थ होऊन बसले.

त्यानंतर त्यांनी दीर्घकाळापर्यंत वेदमंत्रांचे उच्चारण करून ईश्वराचे स्तवन केले. नंतर हिंदीतून परमेश्वराची प्रार्थना केली. शेवटचा श्वास घेण्यापूर्वी त्यांच्या मुखातून पुढील वाक्य बाहेर पडले - **हे प्रभू देवा ! तुझी हिच इच्छा होती, तुझी इच्छा पूर्ण होवो. अरेरे ! तू कसा खेळ खेळलास !** अशा तऱ्हेने परमेश्वराला सामोरे जात या महान आस्तिक ऋषी दयानंदांनी आपली भौतिक जीवनलीला संपविली.

दुसऱ्या दिवशी अजमेरच्या मलूसर श्मशानभूमीत स्वामीजींच्या पार्थिव देहावर अंत्यसंस्कार करण्यात आले. तेंव्हा त्यावेळी भक्त व अनुयायांचा एक मोठा समुदाय तेथे उपस्थित होता. पं. सुंदरलाल व राय भागराम यांनी स्वामीजींच्या गुणांचा व कार्याचा गौरव करण्याचा प्रयत्न केला. पण आपल्या गुरूदेवांच्या वियोगामुळे ते इतके दुःखी झाले होते की त्यांची सद्‌गदित वाणी कांहीही बोलण्यास सक्षम ठरली नाही.

शेवटी दयानंदांचे दिव्य शरीर अग्निदेवतेला अर्पण करण्यात आले. दहनानंतर शेवटी जे कांही उरले, त्यात थोडीशी राख व हाडांचा ढीग शिल्लक होता. दयानंदांचा नश्वर देह आज जरी आपल्यात राहिला नसला, तरी पण त्यांची निर्मळ व उज्ज्वल अशी यशोगाथा आणि कीर्तीचा सुगंध अनंतकाळापर्यंत दिशां-दिशांमध्ये दरवळत राहील. **(समाप्त)**

●●●●●

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

thearyasamaj.org

पुरोगामी व प्रतिगामी विचारकांसाठी चिंतनपर...

सन् १९१८ मध्ये राजर्षी शाहू महाराजांनी लिहिलेले एक मार्मिक पत्र

राष्ट्रीय ऐक्यासाठी 'आर्यसमाज' हेच चांगले साधन

प्रति, मा. श्री रा. खाशेराव जाधव, मु. बडोरे यांस अनेक आशीर्वाद

विशेष.... पत्र लिहिण्यास कारण की, खामगावचे भाषणात जातीभेद मोडले पाहिजेत, असे मी बोलून गेलो. **बोले तैसा चाले, त्यांची वंदावी पाऊले** अशी तुकारामांची उक्ती आहे. त्या दिशेने काही करावे अशा विचाराने आर्य समाजाची म्हणजे वस्तुतः वैदिक धर्माची शाखा स्थापन केली. ढोंगी बोलण्यापेक्षा खरे, स्पष्ट बोलणे हे केव्हाही श्रेयस्करच आहे. मळमळीत सौभाग्यापेक्षा झळझळीत वैधव्य चांगले. त्याप्रमाणे आज पाहिले तर आमचे स्वाभाविक वर्तन आर्यसमाजाला साजेल अशाच प्रकारचे आहे. आमचे व्यवहार कितीही चांगले असले, तरी ब्राह्मण (जातीयवादी) आम्हाला गौणच लेखतात. उलट त्यांच्यात कितीही भ्रष्ट मनुष्य असला, तरी त्याला श्रेष्ठ समजून वागवतात. कोल्हापूर राज्याच्या संस्थापक ताराबाई साहेब महाराज, महाराणी अहिल्याबाई होळकर किंवा अहिल्याबाई (बडोदेकर) आजी साहेब महाराज यांच्यासारख्या साध्वी, फार काय प्रत्यक्ष द्रौपदी, मंदोदरी किंवा जनक राजा किंवा धर्मराज यांनासुद्धा हल्लीचे ब्राह्मण कमी दर्जाचेच समजतात, तर अशा या ब्राह्मणी (जातीयवादाच्या) जड जोखडाखाली आम्ही किती दिवस रखडावे ?

हल्लीची परिस्थिती तर फारच चमत्कारिक आहे. शिक्षण पूर्ण करण्यास विलायतीस जावे लागते. आपली मुले शिक्षणासाठी पाश्चात्य देशात पाठविण्याकडे प्रत्येक रजवाड्याची प्रवृत्ती दिसते. मुले तिकडे गेल्यावर त्यांना सर्व गोष्टींची अनुकूलता असल्याने तिकडील देशांच्या रीतीरिवाजांची आवड उत्पन्न होते व तिकडील मुलींशी लग्न करण्याकडेही त्यांची प्रवृत्ती होणे शक्य आहे. जर का त्यांनी लग्न केले, तर ती फॅमिली ख्रिश्चनांसारखीच झाली. कारण हिंदू धर्मशास्त्राप्रमाणे त्यांना आपल्यात परत घेता येत नाही. अलीकडे हिंदू मिशनरी सोसायटी निघाली आहे. तिच्या तत्वाप्रमाणे त्यांना परत घेता येईल. परंतु त्यांच्याशी कोणी रोटी-बेटी व्यवहार न केल्यामुळे ती एक अति नीच जातीपैकी एक जात होईल व ब्राह्मण (जातीयवादी) लोकांचे थोतांड व कुत्सितपणा अधिकच वाढेल. जामनगरचे माजी महाराज किंवा राजगडचे महाराज यांचा जन्म मुसलमानिणीपासून असला तरी इंग्रज सरकारने त्यांना राज्याचे वारस कबूल केले. तरी पण ब्राह्मणी जातीवाद

thearyasamaj.org

पाळणारे ब्राह्मण त्यांना अति नीचच मानतात. या सर्व अनिष्ठ प्रकारांना काही तरी आळा पडेल असे करणे जरूर नाही काय ? हल्लीच्या परिस्थितीत जातीभेद मोडून ऐक्य असणे फारच इष्ट आहे. जपानने देशाचे कल्याण हाच आपला धर्म समजून जातीभेद मोडून टाकल्यामुळे तो देश आता किती पुढे आला आहे. उलट पक्षी जातीभेदाने गांजलेले देश तर काय, पण एखादे संस्थान, अगर शहर अगर खेडे किंवा एखादी म्युनिसिपालटी किंवा पंचायत यात जातीभेदाचे प्राधान्य असल्यास अशी एक तरी संस्था चांगली सुरळीत चालली आहे काय ? म्हणून आपल्या धर्माचा वैदिकपणा कायम ठेवून जातीचा अडथळा कमी करण्याला आर्यसमाज सध्याच्या काळी चांगले साधन आहे, असे मला वाटते.

पुराणांतरी देव व राक्षस यांच्यात उच्च व कनिष्ठ वर्गात विवाह झाल्याचे आधार आहेत. हल्लीच्या काळीसुद्धा क्षत्रिय मराठ्यांचे संबंध शूद्रांशी झालेले आहेत. कुचबिहारशी तर आमचा संबंध झालाच आहे. इंदूरकरांनी तालचेकरांशी संबंध केला आहे. तेव्हा आता कालाचा ओघ पाहून जामनगर, राजगड, इंदूर, कुचबिहार वगैरे हिंदू राजघराण्यांशी ब्लड रिलेशनशीप घडून येईल ! असे करण्यास आम्ही तयार असले पाहिजे, या गोष्टीला आमचे भूदेव नाके मुरडतील, परंतु त्यांच्यात झाले तरी कर्मधर्माप्रमाणे ब्राह्मणत्व कोठे आहे? नोकऱ्या किंवा वाणिज्य वृत्ती पत्करून ते आता शूद्र व वैश्य बनलेले आहेत. तेव्हा अशा भ्रष्ट लोकांच्या मताला भीक घालण्याचे कारण नाही. सबब या निरनिराळ्या भेदातील हिंदू राजांनी आर्य समाजाच्या विधीप्रमाणे परस्परांत शरीरसंबंध केले, तर त्यांचे हिंदुत्व तर कायम राहीलच, इतकेच नव्हे तर खऱ्या वैदिक धर्माचे संरक्षण व संवर्धन त्यांच्याकडून झाले, असे होईल. अर्थात बर्थ (जन्म) वे पेडिग्री (वंश) राखण्याला इंग्रज, जर्मन व जपानी लोक जपतात. त्याप्रमाणे वरील प्रकारचे विवाह झाल्यास जन्म किंवा वंश यांना कमीपणा येण्याचे मुळीच कारण नाही. हल्लीचे लग्नसुद्धा वैदिक पद्धतीप्रमाणे होण्यास मला काहीच हरकत दिसत नाही.

एकंदरी सक्तीच्या मोफत शिक्षणाचा प्रसार करून लोकांना ज्ञान द्यावे. त्यांना आपली एकंदर परिस्थिती काय आहे व गरजा काय आहेत ते कळवावे व देशात ऐक्य वाढून सर्वांचे कल्याण व्हावे हे ध्येय पुढे ठेवून चालणेचा माझा संकल्प आहे. व त्या दिशेनेच वरील प्रकारचे प्रयत्न आमच्याकडून झाले पाहिजेत, असे मला वाटते, कळावे हा आशीर्वाद !

स्वाक्षरित (शाहु छत्रपती)

साभार-ज्ञानकुमार आर्य, संपादक
वैदिक महासम्मेलन स्मरणिका २००२

thearyasamaj.org

सृष्टीचे नववर्ष-एक चिंतन

– डॉ. प्रकाश कच्छवा

काळ कुणासाठी थांबत नाही. परमेश्वराने निर्मिलेले हे स्वयंभू चक्र आहे. मानवी जीवनात काळाला अनन्यसाधारण महत्व आहे. म्हणून परमेश्वराने सृष्टिनिर्मिती पासून कालगणनेचे सूत्र वेदांद्वारे दिले आहे. त्या सिद्धांतास सौरसिद्धांत किंवा सूर्यसिद्धांताप्रमाणे सूर्योदय-सूर्यास्त, अमावस्या-पौर्णिमा, वेळोवेळी होणारी ग्रहणे याची अचूक मांडणी गणिताद्वारे पंचांग व्यक्त करतात. हे कधीही खोटे ठरत नाही. त्रिकाल सत्य असते. ग्रह, नक्षत्र, तारे यांच्या गतीची गणिते मांडून बनवलेली कालदर्शिका वैज्ञानिक युगात भारतीय संस्कृतीचा अनमोल ठेवा आहे. त्यास जगात कुठेही तोड नाही.

सनातन वैदिक धर्माची कालगणना सृष्टीउत्पत्तीच्या पहिल्या दिवसापासून होते. तो दिवस म्हणजे चैत्र प्रतिपदा (गुडी पाडवा) ! या दिवसापासून परमेश्वराने सृष्टीची निर्मिती प्रारंभ केली. भारतीय संस्कृतीत गुडी पाडवा हा नव वर्ष दिन म्हणून साजरा केला जातो. वर्षाची सुरूवात चैत्र प्रतिपदेपासून होते. चैत्र पल्लवीला वसंत ऋतूचे आगमन होते. वृक्षवल्लींना नवी पालवी फुटते. निसर्ग नाविन्यतेने सजतो. सृष्टीला बहर येतो. हीच खरी नव्या वर्षाची सुरूवात ! निसर्गानुरूप अवतरणारे सहा ऋतू- वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत आणि शिशिर ही भारताला ईश्वराकडून वैभवशाली देणगी आहेत. ऋतू अनूकूल तिथी अनुसार वेगवेगळे पर्व (सण) साजरे केले जातात. पर्वानिमित्त प्रकृतीयोग्य उपयुक्त आहार घेतले जातात. या सर्व वैभवांनी भरलेली आपला भारत देश ! या सर्वांचे पाईक होण्याचे भाग्य आपणां सर्व भारतीयांना लाभले आहे.

सर्वात पुरातन भारतीय कालगणना सृष्टी उत्पत्तीपासूनची आहे. सृष्टीचे आयुष्य (ब्रह्मदेवाचे-पंचांगाप्रमाणे) शंभर वर्षाचे आहे. त्यातील पन्नास वर्ष होऊन गेली. सांप्रत एकावन्नाव्या वर्षाच्या पहिल्या महिन्याचा पहिला दिवस चालू आहे. चार युगे एक वेळा येऊन गेली की ब्रह्मदेवाचा एक दिवस होतो. ब्रह्मदेवाच्या एका दिवसात १४ मनू होतात. आतापर्यंत स्वायंभुव, स्वरोचित, उत्तम, तामस, रेतस, चाक्षुष ही मन्वंतरे होवून गेली. सध्या वैवस्वत मन्वंतर चालू आहे. एका महायुगाची वर्षे ४३ लक्ष २० हजार आहेत. वैवस्वत मन्वंतरातील २७ महायुगे होऊन गेली. २८ वे महायुग चालू आहे. त्यातील १) सतयुगाची (कृतयुग) १७ लक्ष २८

thearyasamaj.org

हजार वर्षे. २) त्रेतायुगाची १२ लक्ष ९६ हजार वर्षे. ३) द्वापरयुगाची ८ लक्ष ८४ हजार वर्षे. ४) सांप्रत चालू कलियुगाची ८ लक्ष ३२ हजार वर्ष होत. कलियुगाची ५११५ वर्षे मागे पडली आहेत. ५११६ वे चालू आहे. ४ लक्ष २६ हजार ८८५ शिल्लक आहेत. (दाते पंचांगानुसार) सृष्टीच्या उत्पत्ती पासूनची आपली कालगणना ही पूर्ण वैज्ञानिक, खगोलशास्त्राशी सुसंगत व निसर्गचक्राप्रमाणे चालणारी अशी वास्तविक गौरवशाली कालगणना आहे. याप्रमाणे निसर्गतः नववर्ष दिन चैत्र प्रतिपदा (गुडीपाडवा) आहे.

भारतातील चक्रवर्ती सम्राटांनी त्यांच्या उज्ज्वल कारकिर्दीचे द्योतक म्हणून आपल्या नावांनी वर्षारंभ सुरू केले. सांप्रत उपयोगात असणारे **विक्रम संवत** हे राजा विक्रमादित्याने सुरू केलेले आहे. त्यास २०७१ वर्षे पूर्ण झाली. २०७२ वे चालू होईल. उत्तर भारतात ही काल गणना प्रचलित आहे. दक्षिणेत चक्रवर्ती राजा शालिवाहन यांनी वर्षारंभ सुरू केला. त्यास १९३६ वर्ष झाली. १९३७ वे सुरू होईल. त्यांनी वर्षगणना सुरू केली, पण सृष्टी चक्राच्या पूर्वापार चालत आलेल्या कालगणनेत बदल केला नाही. दोन्ही विक्रम संवत व शालिवाहन शके हे चैत्र प्रतिपदेपासून सुरू होतात. ईसवीसनाची कालगणना ही प्रेषित येशू ख्रिस्तापासून सुरू होते. त्यांच्या पासून सुरू होत असल्याने निसर्गचक्र किंवा सूर्यसिद्धांताचा त्यास आधार नाही. प्रेषित येशू ख्रिस्त किंवा ख्रिश्चन धर्मास २०१४ वर्षे स्थापना होऊन झाली. त्या अगोदर तिथे कालगणना कोणती होती ? याचे उत्तर सूर्यसिद्धांतांप्रमाणे प्रतिपादित भारतीय कालगणना हीच होती, असे द्यावे लागेल. तसेच इस्लाम धर्माचे संस्थापक महंमद पैगंबर यांच्यापासून हिजरी सन सुरूवात होते. यास १४३६ वर्षे झाली १४३७ वे चालू आहे. त्या अगोदर तीथे कालगणना कोणती होती ? याचे ही उत्तर सूर्यसिद्धांत प्रतिपादित भारतीय कालगणनाच होती, असे द्यावे लागेल.

वैज्ञानिक युगात वावरतांना आपण कोणती काल गणना स्वीकारणार आहोत ? हा खरा प्रश्न आहे. दीडशे वर्षे राज्य करणाऱ्या इंग्रजांनी त्यांची संस्कृती, भाषा, वेशभूषा, आचार-व्यवहार आपल्यावर गुलामांप्रमाणे लादलेले आहेत. आपल्यानंतर स्वतंत्र होणाऱ्या देशांनी आपआपली संस्कृती, भाषा, आचार, व्यवहार अंगिकारले आहेत. (उदा. पाकिस्तान, बांगलादेश, म्यानमार इ.) पण मनाने गुलाम झालेले आपण सर्वार्थाने स्वतंत्र होणार आहोत का ? आपली संस्कृती, आपली भाषा, आपली नीतिमूल्ये आपली समाज व्यवस्था, कुटुंब व्यवस्था, अर्थव्यवस्था आदींचा अंगिकार

thearyasamaj.org

करणार आहोत का ?

नीतिमूल्यावर आधारित समाज, प्रत्येकांची उन्नती साधणारी स्वदेशी अर्थव्यवस्था, उत्तरोत्तर मानवतेकडे घेऊन जाणार मानव धर्म या सर्वांना वैज्ञानिक तर्कशुद्ध अधिष्ठान देणारी भारतीय वैदिक संस्कृती ! याचा आपण सहर्ष अंगिकार करू या.

यापुढे ब्रिटिश विचारांचे नववर्ष किंवा 'थर्टी फस्ट' चा धांडगधिंगा न करता आपल्या संस्कृतीचा अभिमान बाळगत येत्या (२१ मार्च) नववर्षासाठी आतापासूनच भेटकार्ड, मोबाईल संदेश वगैरे पाठवून शुभेच्छा देऊ या ! आत्मचिंतन व आत्मकल्याणाचा खरा वेदमार्ग स्वीकारू या ! सृष्टीचे नववर्ष चैत्र प्रतिपदेच्या म्हणजे गुडी पाडव्याच्या आपणां सर्वांना हार्दिक शुभेच्छा !

– आर्य समाज, औराद शहा.
जि. लातूर/ ९४२०८७०१२४

प्रेरणा

श्रीमती सुशीलादेवी गुट्टे व परिवारांकडून आर्य समाजांस

स्व. सदाशिवराव गुट्टे स्मरणार्थ २ लाखाची देणगी

परळी येथील आर्य समाजाचे दिवंगत सक्रिय कार्यकर्ते व आर्य भजनीक स्व.पं. सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे यांच्या स्मरणार्थ त्यांच्या धर्मपत्नी श्रीमती सुशीलादेवी गुट्टे व समस्त गुट्टे (मृत्यु दि.७/६/२०१४)परिवाराने उदार अंतःकरणाने रू.२ लाखाचा निधी गुरूकुल शिक्षण प्रसार व वैदिक धर्माच्या प्रचारासाठी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेला प्रदान करून समाजासमोर उच्च आदर्श प्रस्थापित केला आहे. त्यांच्या या प्रेरक कार्यामुळे लोकांमध्ये सामाजिक कार्यात मदत करण्याची भावना वाढीस लागेल.

श्रीमती गुट्टे यांनी आपले पति स्व.सदाशिवराव यांच्या स्मरणार्थ वैदिक धर्माच्या प्रसारकार्यात विविध उपक्रम राबविण्यात यावेत, यासाठी प्रांतीय सभेला एक लाखाचा निधी तर गुरूकुल शिक्षण प्रसाराच्या उद्देशाने स्वामी श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रमाच्या विकासासाठी एक लाखा निधी प्रदान केला आहे. यातील पहिली १ लाखाची स्थिरनिधी **स्व. सदाशिवराव गुट्टे यांच्या स्मरणार्थ** राज्यात वैदिक धर्म प्रसारासाठी असेल तर दुसरी १ लाखाची स्थिरनिधी श्रीमती सुशीलादेवी सदाशिवराव गुट्टे यांच्या गौरवार्थ श्रद्धानंद गुरूकुलासाठी असेल. सभेने वरील एक-एक लाख

thearyasamaj.org

रूपयाच्या स्वतंत्र स्थिरनिधी पुढीलप्रमाणे भारतीय स्टेट बँकेच्या परळी शाखेत सभेच्या नावे स्थापन केल्या आहेत. या पवित्र दानकार्यास्तव प्रांतीय सभा, आर्य समाज परळी श्रीमती सुशीलादेवी गुट्टे व परिवाराचे अभिनंदन करून धन्यवाद व्यक्त करते !

स्व. सदाशिवराव गुट्टे (परळी) यांच्या स्मृरणार्थ वैदिक धर्म प्रचारासाठी (१) महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभेत रू. १०,००० ची स्थिरनिधी

अ) श्रीमती सुशीलादेवी सदाशिवराव गुट्टे यांचे स्थिरनिधी स्थापनेसाठी सभेस पत्र

श्रीमती सुशीलादेवी सदाशिवराव
धर्मपत्नी ... गुट्टे
विद्यानगर, परळी वै. जि. बीड
दिनांक २०-९-२०१४

श्रीमान मंत्रीजी
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्यसमाज परळी वै. जि. बीड

विषय :- सभा अंतर्गत सशर्त स्थिर निधी रखने हेतु विनंती
महोदय स. न.

मेरे पतिदेव स्व. सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे मूल रहिवासी मोकदरी ता. अहमदपूर, हा. परळी मे रहते थे और बचपन से आर्यसमाजी थे। उनका धार्मिक संबंध पू. स्व. उत्तममुनी वानप्रस्थीजी से भी था और वो उनके शिष्य थे। आर्यसमाज परली के सदस्य व कार्यकर्ता भजनोपदेशक थे। सभा मे भी उन्होने भजनोपदेशक बनकर बहुत काम किया। उनका देहान्त (मृत्यु) दि. ७ जून २०१४ को हुआ।

उनका नाम आर्यजगत मे रहे और प्रचार का काम उनके नामपर हमेशा होता रहे इस उद्देश्य से मैं श्रीमती सुशीलादेवी सदाशिवराव गुट्टे रा. परली उनके नाम पर सशर्त स्थिर निधी रखना चाहती हूँ। अतः आप निम्न शर्तों के साथ स्थिर निधी सभा मे रख ले।

1. स्थिरनिधी का नाम :- म. आ. प्र. सभा खाते "स्व. सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे मोकदरीकर परली, स्मारक स्थिर निधी धर्मप्रचार के लिए"
2. स्थिरनिधी का मूल धन :- इस स्थिरनिधी का धन ₹ 10000/- होगा
3. यह मूल धन कोई भी कभी भी सभा के प्रस्ताव से भी ना निकाल सकेंगे, ना कर्जा दे सकेगा, ना गहाण रख सकेगा।
4. इसका केवल नूतनीकरण होगा।
5. इस स्थिर निधी का वार्षिक ब्याज सिधा सभा के SBI parli के खाते नं. 11154152843 मे जमा होगा।
6. सभा इस ब्याज का उपयोग वैदिक धर्म का प्रचार में उनके नाम पर (स्व. सदाशिवराव गुट्टे) करेगी।
7. इस स्थिर निधी की अंतीम स्वामिनी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-2 होगी पर उन को भी केवल ब्याज का उपयोग उद्देश्यानुसार करने का अधिकार होगा।

अतः आपसे विनंती की कृपा करके उपर की शर्तों को मान्यता देकर सभा मे स्थिर निधी रखलेने की कृपा करें।

आप की
सुशीलाबाई
श्रीमती सुशीलादेवी सदाशिवराव गुट्टे विद्यानगर परळी-वै.

स्विकृत
VS Rathor
प्रतिनिधि सभा

thearyasamaj.org

ब) स्व.सदाशिवराव गुट्टे स्मृति स्थिरनिधी (१ लाख रू.) स्थापने संदर्भात

प्रांतीय सभेचे भारतीय स्टेट बँक शाखा परळीस पत्र

मानव कल्याण मार्ग-वेद मार्ग

|| ओ३म् ||

● 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।' ●

अयं तु परमो धर्मो यद् योगेन आत्मदर्शनम्।

मानव संस्कृति- वैदिक संस्कृति

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, वाजेगांव-नांदेड

कार्यालय - आर्य समाज, परली वैजनाथ - ४३१५१५ जि. बीड (महाराष्ट्र)

पंजीयन - एफ-३३२

न्यास नों. क्र. - ६/टी.ई. (७६) १६७/१०४९

प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	श्री उग्रसेन राठौर	राजेन्द्र दिवे
परली वै. (मो.०९७३०६७६८५७)	परली वै. (मो. ०९४२२२४१८४७)	लातूर (मो. ०९८२२३६५२७२)

● कार्यकारी प्रधान ●
बलिराम पाटील
● उपप्रधान ●
दयाराम बसैय्ये
बोधमुनि (धुंडियाल)
● उपमन्त्री ●
माधवराव देशपांडे
प्राचार्य देवदत्त तुंगार
प्रा.डॉ. प्रकाश कदम
● परामर्शदाता ●
डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी
● पुस्तकाध्यक्ष/वेद प्र.अधिष्ठाता ●
लक्ष्मणराव आर्य (हुलगुंडे)
● वैदिक गर्जना-सम्पादक ●
प्रा. डॉ. नयनकुमार आचार्य
● आर्यवीर दल अधिष्ठाता ●
व्यंकटेश हालिंगे
● कन्या संस्कार शिविर प्रमुख ●
डॉ. सौ. शारदा तुंगार
दिनकरराव देशपांडे
● मानवता संस्कार शिविर प्रमुख ●
प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी
प्रा. डॉ.प्रकाश कदम
● स्पर्धा उपक्रम प्रमुख ●
प्रा. शिवाजीराव गायकवाड
● अंतरजातीय विवाह प्रमुख ●
माणिकराव भोसले
किशनराव राउत
● गौ-कृषि सेवा विभाग प्रमुख ●
ॲड. विजयकुमार वाघमारे
● दिनदर्शिका प्रमुख ●
विजयकुमार कांबळे
● स्वास्थ्य रक्षा शिविर प्रमुख ●
वैद्य विज्ञानमुनि
● पुरोहित प्रशिक्षण शिविर प्रमुख ●
सुरेश चिन्तावार
● संरक्षक ●
कृष्णचंद्र आर्य
रामपाल लोहिया
आचार्य शिवमुनि
गुलाबचन्द लखनिया

जा. क्र. -

दिनांक - 25-9-2014

श्रीमान मॅनेजर

स्टेट बँक ऑफ इंडिया

शाखा परळी-वै.

विषय :- सभा अंतर्गत शर्तों स्थिर निधी रखने हेतु।

महोदय स. नं.

श्रीमती सुशीलादेवी सदाशिवराव गुट्टे येल्दरीकर परळी अपने पति स्व. सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे के नाम पर सभा में स्थिर निधी शर्तों के साथ रखने के लिए सभा को पत्र दिया है। सभा ने उसे मंजूर किया है।

अतः आपसे विनंती की निम्न शर्तों के साथ सभा अंतर्गत स्थिर निधी रखने की कृपा करें।

1. स्थिर निधी का नाम :- म.आ.प्र.सभा खाते "स्व. सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे येल्दरीकर परळी स्मारक स्थिर निधी धर्म प्रचार के लिए"।
2. स्थिर निधी का मूलधन :- ₹ 100000/- एक लाख रुपये।
3. इस स्थिर निधी के मूलधन को कोई भी कभी भी, सभा के प्रस्ताव से भी ना निकाल सकेगा, ना कर्ज उठा सकेगा, ना गहान रख सकेगा।
4. इस स्थिर निधी का केवल नूतनीकरण होगा।
5. इस स्थिर निधी का वार्षिक ब्याज सीधा सभा के SBI Parli के खाता नं. 11154152843 में जमा होगा।
6. इस स्थिर निधी की अंतिम स्वामिनी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा नई-दिल्ली-2 होगी पर उनको भी केवल ब्याज का उपयोग उद्देश्यानुसार करने का अधिकार होगा।

अतः आपसे विनंती की इन शर्तों के साथ सभा अंतर्गत यह स्थिर निधी रखके उपकृत करें।

आपका

(हस्ताक्षर)

कोषाध्यक्ष

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधिसभा

thearyasamaj.org

क) स्व.सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे यांच्या स्मरणार्थ भारतीय स्टेट बँकेच्या परळी शाखेत स्थापित रू. १,००,०००/- च्या स्थिरनिधीची झेरॉक्स प्रत

स्व.सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे (येलदरीकर) परळी-वै. स्मारक वेदधर्म प्रचार स्थिरनिधी

No withdrawl only Renewal - yearly Int tr- to A/c 11154152843

यह अपरक्राम्य लिखत नहीं है
This is not a Negotiable Document

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

PARLI VAIJNATH DIST:BEED
MAHARASHTRA INDIA 431515
Tel: 222069

सावधि जमा सूचना
TERM DEPOSIT ADVICE
(सावधि जमा रसीद के एवज में)
(In lieu of Term Deposit Receipt)

MAHARASHTRA ARYA PRATINIDHI SABHA
ARYA SAMAJ
PARLI VAIJNATH
DIST BEED MAHARASHTRA

नामांकन /Nomination : पंजीकृत / Registered / अपंजीकृत / Not Registered
दिनांक / Date : 26/09/2014

प्रिय महोदय / महोदया, Dear Sir/Madam,

हमें यह पुष्टि करते हुए प्रसन्नता है कि आपकी निम्नलिखित राशि हमारे पास जमा है. भविष्य में, कृपया आपके पत्राचार में खाता क्रमांक का संदर्भ अवश्य दें. हमारे साथ बैंकिंग करने के लिए धन्यवाद. We have pleasure in confirming details of the following amount held in deposit with us. Please quote the account number in all correspondence. Thank you for Banking with us.

नाम /Name: MAHARASHTRA ARYA PRATINIDHI SABHA.
सिफ संख्या / CIF No. 8063640647-8
पैन संख्या / PAN NO. AABTM4425A

A/c Late Sadashivrao Patloba Gutte Yeldarikar Parli V. Smarak Sthir Nidhi Vaidik Dharm Prachar ke liye.

खाता संचालन की विधि / Mode of Operation :
योजना / Scheme : TDR-GEN-PUB IND-5Y-10Y-INR

खाता क्रमांक /A/c No.	सावधि/ Term	ब्याज दर Interest @	मूल राशि Principal Amt.	जारी करने की तारीख Value Date	परिपक्वता की तारीख Maturity Date
34242865815	10 Y	8.6 %	INR 1,00,000.00	26.9.2014	26.9.2024

परिपक्वता राशि / Maturity Value : INR 1,00,000.00

भवदीय /Yours faithfully,

प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता /Authorised Signatory

कृपया पृष्ठ पलटें /P.T.O.

Item Code - 2530017

पुढील अंकात- गुट्टे दांपत्याचा अल्पपरिचय व श्रीमती सुशीलादेवी गुट्टे गौरव स्थिरनिधीची माहिती प्रसिद्ध होईल - संपादकच

thearyasamaj.org

शोक वार्ता उद्योजक रवीन्द्र साळुंके यांना मातृशोक

प्रसिद्ध उद्योजक, सामाजिक कार्यकर्ते व उस्मानाबाद येथील आर्य समाजाचे सदस्य श्री रवींन्द्र साळुंके यांच्या मातु:श्री श्रीमती दुर्गादेवी ग्यानुराव साळुंके यांचे दि. १६ फेब्रुवारी २०१५ सायं. ४.४५ वा. अल्पशा आजाराने दुःखद निधन झाले. मृयुसमयी त्या ८२ वर्षे वयाच्या होत्या.

त्यांच्या मागे सुपुत्र श्री रवींद्रजी, स्नुषा प्राचार्या डॉ.अनार साळुंके, कन्या सौ.मालती चव्हाण (मुंबई), सौ. भारती शिंदे (औरंगाबाद), नातू-नाती असा परिवार आहे. श्रीमती साळुंके गेल्या ४ महिन्यापासून हृदयविकाराने आजारी होत्या उपचार करण्यात आले.

मातु:श्री दुर्गाबाई यांचा जन्म १९३२ साली निजामाबाद येथे झाला. वडील गोपालराव मेदक्कर हे प्रखर गांधीवादी विचारवंत व काँग्रेस चळवळीतील एक लढवय्ये कार्यकर्ते होते परिस्थिती सामान्य असतांना देखील त्यांनी आपल्या मुलां-मुलींचे शिक्षण मोठ्या परिश्रमाने केले. प्रखर सत्यवादी असलेल्या गोपाळरावांनी सिद्धांताशी कधीही तडजोड केली नाही. मानवतेच्या विचारांनी प्रेरित होऊन त्यांनी आपल्या कन्या दुर्गाबाई यांचा अंतर्राजातीय विवाह उस्मानाबाद येथे कट्टर आर्य समाजी व आदर्श शिक्षक श्री ग्यानुराव साळुंके यांचेशी इ.स.१९५१ साली घडवून आणला आन्ध्रकन्या दुर्गादेवी विवाहनंतर महाराष्ट्रवासिनी झाल्या. आपले तत्वनिष्ठ पतिदेव श्री ग्यानुराव साळुंके यांच्या संघर्षमय जीवनात त्यांनी मोलाची साथ दिली.

प्राथमिक शिक्षिका बनुन त्यांनी तुळजापुर व उस्मानाबाद येथे जवळपास ३५ वर्षे ज्ञानदानाचे पवित्र कार्य केले. एक विद्यार्थी प्रिय शिक्षिकेच्या रूपाने त्यांची प्रतिष्ठा होती. अध्यापनाबरोबर कौटुंबिक कार्यात उत्तम गृहिणी म्हणूनही त्यांनी भूमिका बजावली आपल्या मुला-मुलींचे शिक्षण पूर्ण करण्यात व त्यांना संस्कार क्षम बनविण्यात त्या अग्रणी ठरल्या तसेच मुला-मुलींचे जात-पात तोडून अंतरजातीय विवाह घडवून आणले. आजही सर्व कुंटुंबिय आर्थिक व सामाजिक दृष्ट्या सुस्थिर असून आपआपल्या कार्यक्षेत्रात प्रगतीपथावर आहेत. त्यांच्याच प्रयत्नांने १९६८ साली भगिनी विमलाबाई यांच्या प्रा.डॉ.सुग्रीव बळीराम काळे (आताचे ब्रह्ममुनिजी) यांचेशी आंतरजातीय व आंतरप्रांतीय तर तिसऱ्या भगिनी कमलबाई (ज्योती) यांचा

thearyasamaj.org

प्रा.शरद रघूत्तमदास डुमणे यांच्याशी आंतरप्रांतीय विवाह घडून आला.

स्व.श्रीमती साळुंके यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी उस्मानाबादेतील सार्वजनिक स्मशानभूमीत पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. सर्वश्री पं.प्रशांतकुमार शास्त्री, तानाजी शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, विजयकुमार बंग आदिंनी हा अत्यंविधी संपन्न केला. आर्य समाज उस्मानाबादच्या कार्यकर्त्यांनी वेदमंत्राचे पठन केले. यावेळी झालेल्या शोकसभेत सर्वश्री प्रा.शरद डुमणे, नीतीन तावडे, मिलिंद पाटील, डॉ. दीपक पोफळे, संजय देशमाने, गोविंद मैंदरकर, डॉ. ब्रह्ममुनिजी, सुधाकर पाटील आदिंनी श्रद्धाजंली वाहिली. तर प्राचार्य वेदमुनिजी वेदालंकार यांनी सामुहिक प्रार्थना सादर केले. या प्रसंगी शहर व परिसरातील प्रतिष्ठित व्यापारी, सामाजिक कार्यकर्ते व आर्यजन मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

अंतेश्वरअप्पा बुरांडे यांना पुत्रशोक

गिरवली ता. अंबाजोगाई जि. बीड येथील सामाजिक कार्यकर्ते, निवृत्त शिक्षक व म.दयानंदांचे अनुयायी श्री अंतेश्वरअप्पा बुरांडे यांचे तरूण वयातील सुपुत्र श्री महादेव बुरांडे यांचे नुकतेच अपघाती निधन झाले. त्यांच्या आकस्मिक दुःखद निधनामुळे संबंध बुरांडे कुटुंबात दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे.

श्री अंतेश्वरअप्पा हे परळीचे कट्टर आर्यसमाजी स्व.दौलतराव गिरवलकर यांचे शिष्य असून त्यांच्यामुळेच ते आर्यसमाजी बनले. त्यांनी एकेकाळी आर्यसमाज परळीच्या सेवाकार्यात योगदान दिले होते. मनोभावे सेवाकार्य केले होते.

योग साधना का उत्तम स्थान....सुख-शान्ति का धाम

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली

आयु के ५०-६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु **आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड- (महा.)** में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं। साथ ही अपनी सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी लोग भी वर्ष में एक या दो बार आकर दस - पन्द्रह दिनों तक रह सकते हैं। यहां पर प्राकृतिक व आयुर्वेदक चिकित्सा, ध्यान धारणा केंद्र, वैदिक ग्रन्थालय आदि द्वारा स्वास्थ रक्षा योग-साधना, स्वाध्याय-चिंतन का लाभ उठा सकते हैं। सभी सज्जनों का स्वागत हैं!

- व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो !

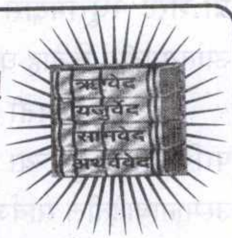

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु

कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

– मानवकल्याणकारी उपक्रम –

- ‘वैदिक गर्जना’ मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–‘मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर’
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

सेठ श्री रामपाल लोहिया का जन्मदिवस

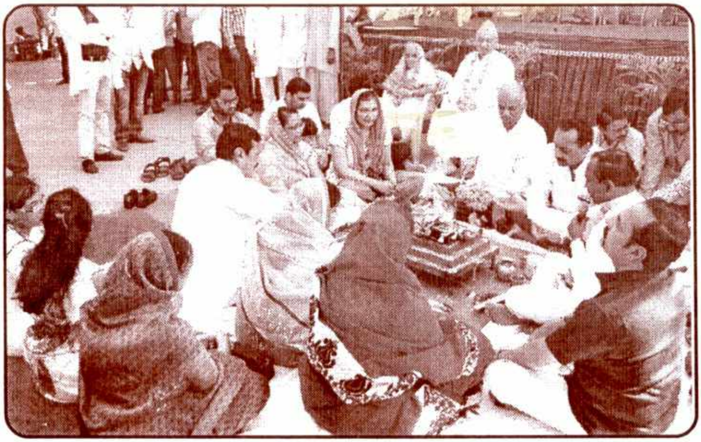

नेत्र चिकित्सा शिविर कार्यक्रम में आयोजित यज्ञ में आहुतिया प्रदान करते हुए विश्वविख्यात नेत्र विशेषज्ञ पद्मश्री डॉ.तात्यारावजी लहाने एवं डॉ. राघिनी पारीख तथा लोहिया यजमान ।

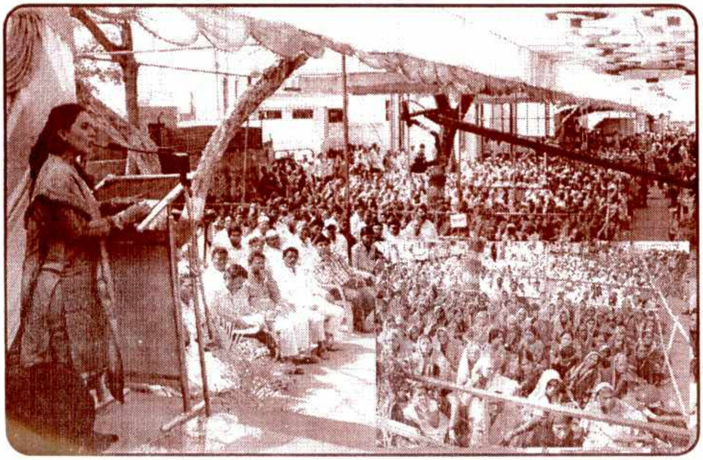

श्री लोहिया चाचाजी के जीवन व कार्यों का गौरव व्यक्त करते हुए सांसद डॉ.सौ.प्रीतमदीदी गोपीनाथ मुंडे (खाडे) तथा सामने उपस्थिती जनसैलाब ।

मंचपर अध्यक्ष डॉ.ब्रह्ममुनिजी, पद्मश्री डॉ.लहाने, सांसद डॉ.मुंडे, डॉ. पारीख, विधायक देशमुख, जुगलकिशोरजी लोहिया तथा सामने यजमान लोहिया दम्पती ।

thearyasamaj.org

REG.No. MAHBIL/2007/7493 ★ Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों को वढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य

(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या

(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट !